Resource: Gateway Simplified Text (Hindi)

License Information

Gateway Simplified Text (Hindi) (Hindi) is based on: Gateway Simplified Text (Hindi), unfoldingWord, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Gateway Simplified Text (Hindi)

1 Corinthians 1:1

1 {मैं,} पौलुस, {यह पत्री तुम्हें लिखता हूँ,} और हमारा संगी विश्वासी सोस्थिनेस {मेरे साथ है}। परमेश्वर ने मुझे इसलिए चुना ताकि यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजे, क्योंकि परमेश्वर यही चाहता था।

2 {मैं यह पत्री तुम को भेजता हूँ} जो परमेश्वर के विश्वासियों के उन समूहों {का भाग हैं}, जो कुरिन्थ नगर में पाए जाते हैं। {परमेश्वर ने तुम को} मसीह यीशु के साथ एकजुट करके अपने लिए अलग कर दिया है, और {उसने तुम को} उसके लोग होने के लिए चुन लिया है। {तुम} विश्वासियों के उस समूह का भाग हो जो कई देशों और नगरों में हमारे प्रभु यीशु मसीह की आराधना करते हैं। {यीशु मसीह ही} उनका भी {प्रभु} है और हमारा भी {प्रभु} है।

3 परमेश्वर, {जो} हमारा पिता है, और प्रभु यीशु मसीह तुम पर कृपा {करते रहें} और तुम्हें शान्ति {प्रदान करें}।

4 मैं अक्सर तुम्हारे बारे में अपने परमेश्वर को धन्यवाद करता हूँ। {मैं ऐसा इसलिए करता हूँ} क्योंकि {मैं जानता हूँ कि कैसे} परमेश्वर तुम को यीशु मसीह के साथ एकजुट करके तुम्हारे प्रति दयालु होकर कार्य कर रहा है।

5 {जब मैं कहता हूँ कि परमेश्वर ने तुम पर दयालु होकर कार्य किया है, तो मेरा अर्थ है} कि उसने तुम को {तुम्हारे जीवन के} हर क्षेत्र में मसीह के साथ एकजुट करके तुम्हें भरपूर आशीषें प्रदान की हैं, जिसमें जो कुछ भी तुम कहते हो और जो कुछ भी तुम जानते हो वह भी शामिल है।

6 {परमेश्वर ने तुम को आशीषें इसलिए दी हैं} क्योंकि उसने तुम पर यह साबित कर दिया है कि जो बातें हम ने तुम को मसीह के बारे में जो बताई थीं वह सच थीं।

7 {परमेश्वर ने तुम्हारे लिए इन कामों को इसलिए किया है} ताकि तुम पूर्ण रीति से {इस समय के दौरान} आत्मिक रूप से सुसज्जित हो जाओ {जब तुम} विश्वास के साथ हमारे प्रभु यीशु मसीह के लौटने की आशा करते हो।

8 {जिस प्रकार से उसने हमारे सन्देश को सच साबित कर दिया है, वैसे ही} परमेश्वर तुम्हारे भरोसे को भी {मसीह में} सच साबित करेगा जब तक कि {तुम्हारा सांसारिक जीवन} समाप्त नहीं हो जाता। {इस कारण से,} जब हमारा प्रभु यीशु मसीह {पृथ्वी पर} वापस आएगा तो वह तुम को निर्दोष ठहराएगा।

9 परमेश्वर हमेशा वही करता है जिसकी वह प्रतिज्ञा करता है, {और वही है} जिसने तुम को उसके पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह के साथ सब कुछ साझा करने के लिए विशेष रूप से चुना है।

10 हे मेरे संगी विश्वासियों, तुम जिनको हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अधिकार प्रदान किया है, मैं तुम से {यह कहकर} निवेदन करता हूँ कि तुम सभी एक दूसरे से सहमत रहो। (मैं पूछता हूँ कि) तुम प्रतिद्वंद्वी समूहों में विभाजित मत हो, परन्तु तुम जो सोचते हो उसमें सहमत होने के द्वारा और जो तुम करने का निर्णय लेते हो, उस पर सहमत होने के द्वारा तुम एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप करो।

11 हे मेरे संगी विश्वासियों, {मैं तुम से इसलिए भी निवेदन करता हूँ} क्योंकि खलोए के {घराने के} कुछ {सदस्यों} ने मुझ से तुम्हारे बारे में बातें की हैं। {उन्होंने कहा} कि तुम आपस में झगड़ते हो।

12 मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ वह यह है कि उदाहरण के लिए, तुम में से कितने लोग दावा करते हैं कि तुम पौलुस के समूह वाले हो, या कि तुम अपुल्लोस के समूह वाले हो, या कि तुम कैफा के समूह वाले हो, या कि तुम मसीह के समूह वाले हो।

13 किसी ने भी मसीह को टुकड़ों में नहीं बाँटा है{, इसलिए तुम्हें भी टुकड़ों में नहीं बँटना चाहिए}। किसी ने तुम्हारे निमित्त पौलुस को क्रूस पर नहीं चढ़ाया, और किसी ने तुम्हें इसलिए बपतिस्मा नहीं दिया कि तुम पौलुस के हो जाओ।

14 मैं {परमेश्वर का} धन्यवाद करता हूँ कि मैंने {दो व्यक्तियों:} क्रिस्पुस और गयुस को छोड़कर किसी भी ऐसे व्यक्ति को बपतिस्मा नहीं दिया जो तुम्हारे समूह का है।

15 क्योंकि {मैंने तुम में से कुछ लोगों को ही बपतिस्मा दिया है, इसलिए} कोई भी व्यक्ति यह दावा करने में सक्षम नहीं है कि मैंने तुम को बपतिस्मा दिया है इसलिए तुम मेरे समूह वाले हो।

16 अरे हाँ, मुझे स्मरण है कि मैंने स्तिफनास के घर में रहने वालों को भी बपतिस्मा दिया था। इसके अलावा, मैं नहीं सोचता कि मैंने {तुम्हारे समूह में} किसी अन्य व्यक्ति को बपतिस्मा दिया है।

17 {मैंने तुम में से कुछ ही लोगों को बपतिस्मा दिया} इसका कारण यह है कि मसीह ने मुझे {लोगों} को बपतिस्मा देने का आदेश नहीं दिया। बजाए इसके, {उसने मुझे} शुभ सन्देश सुनाने का {आदेश दिया है}। और {मैं यह} उन बातों का उपयोग किए बिना {करता हूँ} जो {मानवीय मानकों के अनुसार} बुद्धिमानी की बातें हैं। इस रीति से, मैं क्रूस पर मरने वाले मसीह {के सन्देश की सामर्थ्य} को नष्ट नहीं करता।

18 {मैं बुद्धिमानी की बातों का उपयोग इसलिए नहीं करता,} क्योंकि जो सन्देश मैं क्रूस {पर मसीह की मृत्यु} के बारे में सुनाता हूँ, वह उन लोगों को मूर्खता लगता है जो स्वयं पर विनाश ला रहे हैं। हालाँकि, परमेश्वर इस सन्देश में होकर शक्तिशाली रूप से हमारे लिए जिनको वह बचा रहा है कार्य करता है।

19 {तुम भी बता सकते हो कि यह सच है,} क्योंकि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखा है, "जिन बुद्धिमानी की बातों को बुद्धिमान लोग सोचते हैं, मैं उन्हें निष्फल कर दूँगा, और जिन बातों को समझदार लोग बेकार मानते हैं मैं उन्हें समझदारी की बातें बना दूँगा।"

20 {तो फिर,} बुद्धिमान लोग वास्तव में बुद्धिमान नहीं होते हैं, और विशेषज्ञ वास्तव में विशेषज्ञ नहीं होते हैं, और जो लोग बहस करने में अच्छे होते हैं वे वास्तव में इसमें अच्छे नहीं होते हैं, क्योंकि वे सभी वर्तमान सांसारिक प्रणाली से सम्बन्धित होते हैं। {वास्तव में,} परमेश्वर ने यह प्रकट किया है कि इस वर्तमान संसार में जो बुद्धिमानी की बात लगती है वह बुद्धिमानी का बात बिलकुल भी नहीं है।

21 यहाँ बताया गया है कि {परमेश्वर ने यह कैसे किया}। जैसे परमेश्वर ने बुद्धिमानी से चुनाव किया, वैसे ही अविश्वासियों ने अपनी बुद्धिमानी की सोच से परमेश्वर को नहीं जाना। इसलिए, परमेश्वर ने उन लोगों को बचाने का निर्णय लिया, जो उस मूर्ख सन्देश के माध्यम से {मसीह पर} विश्वास करते हैं, जिसे विश्वासी लोग सुनाते हैं।

22 एक ओर, {बहुत से} यहूदी लोग शक्तिशाली कर्म देखना चाहते हैं। दूसरी ओर, {बहुत से} यूनानी लोग बुद्धिमानी की सोच की खोज करते हैं।

23 हालाँकि, हम यह घोषणा करते हैं कि मसीह क्रूस पर मरा। {बहुत से} यहूदी लोग {इस सन्देश को} अपमानजनक मानते हैं, और {बहुत से} गैर-यहूदी लोग {सोचते हैं कि यह सन्देश} मूर्खता है।

24 हालाँकि, हम जिनको परमेश्वर ने चुना है, चाहे {हम} यहूदी {लोग} हों या यूनानी {लोग}, हम ने सीखा है कि परमेश्वर मसीह {के बारे में इस सन्देश} के माध्यम से शक्तिशाली रूप से और बुद्धिमानी से काम करता है।

25 {ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर जो करता है वह मूर्खता लगता है, परन्तु वह मनुष्य {जो कुछ भी करता है} उसकी तुलना में बहुत बुद्धिमानी है, और परमेश्वर जो करता है वह निर्बल लगता है, परन्तु वह मनुष्य {जो कुछ भी करता है} उसकी तुलना में बहुत बलवान है।

26 हे संगी विश्वासियों, {सबूत के लिए कि यह ऐसा ही है,} इस तथ्य के बारे में विचार करो कि परमेश्वर ने तुम्हें वैसे ही चुना है {जैसे तुम हो}। मानवीय दृष्टिकोण से, तुम में से अधिकांश ने बुद्धिमानी से विचार नहीं किया, शक्तिशाली कर्म नहीं किए, {या} महत्वपूर्ण परिवारों से सम्बन्धित नहीं हो।

27 बजाए इसके, मनुष्यों को जो बात मूर्खता लगती है परमेश्वर ने उसे ही उपयोग में लाने का निर्णय लिया ताकि उन लोगों को विनम्र बनाए जो बुद्धिमानी से सोचते हैं। मनुष्यों को जो बात निर्बल लगती है परमेश्वर ने उसे ही उपयोग में लाने का

1 Corinthians 2:1

निर्णय लिया ताकि उन लोगों को और वस्तुओं को विनम्र बनाए जो शक्तिशाली रूप से कार्य करते हैं।

28 लोगों को जो बातें महत्वहीन लगती हैं और जिन्हें लोग तुच्छ समझते हैं परमेश्वर ने उनको ही उपयोग में लाने का निर्णय लिया। {यह ऐसा है कि जैसे} ये वस्तुएँ अस्तित्व में {भी} नहीं हैं, {परन्तु परमेश्वर ने उनको ही उपयोग में लाने का निर्णय इसलिए लिया} ताकि उन वस्तुओं को निरर्थक ठहराए जिनके बारे में हर कोई जानता है।

29 {परमेश्वर ने ये काम इस लक्ष्य के साथ किए} कि कोई भी मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें न बोले।

30 यह परमेश्वर ही है जिसने तुम्हें यीशु मसीह के साथ एकजुट किया है। मसीह के माध्यम से कार्य करके, परमेश्वर ने हमें बुद्धिमान बनाया है। उसने हमें निर्दोष घोषित किया है, और हमें उसके लोग होने के लिए चुना है, और हमें {बुरी शक्तियों से} छुड़ाया है।

31 इसलिए, {क्योंकि परमेश्वर ही वह है जो इन सब कामों को करता है, हमें वह करना चाहिए जो} यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा है: "यदि लोग किसी के बारे में बड़ी-बड़ी बातें बोलना चाहते हैं, तो उन्हें यहोवा के बारे में उन महान बातों को बोलना चाहिए।"

1 Corinthians 2:1

1 हे मेरे संगी विश्वासियों, मैंने भी {इसी तरीके के अनुसार उस समय कार्य किया था} जब मैं तुम से मिलने आया था और तुम को उस बारे में बताया था जो परमेश्वर ने अब हम पर प्रकट किया है। मैंने दूसरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली रीति से बातें नहीं कीं। मैंने दूसरों की तुलना में अधिक बुद्धिमानी से बहस नहीं की।

2 {मैंने ऐसा इसलिए किया} क्योंकि मैंने {बोलने और कार्य करने के लिए मानो} केवल उन बातों को ही चुना था जो मैंने तब समझी थीं जब मैं तुम्हारे साथ था, कि कैसे तुम यीशु मसीह के साथ थे और क्रूस पर उसकी मृत्यु कैसे हुई थी।

3 जब मैं तुम्हारे साथ रह रहा था तब मैंने भी {इस तरीके के अनुसार जीवन व्यतीत किया}। मैं बीमार था, मैं भयभीत था, और मैं बार-बार काँपता और थरथराता था।

4 जब मैंने {तुम से} बातें कीं और अपना सन्देश {तुम्हारे साथ} साझा किया तो मैंने बुद्धिमानी से और प्रेरक रूप से {मानवीय मानकों के अनुसार} बातें नहीं कीं। बजाए इसके, मैंने साबित किया कि {जब मैंने अपना सन्देश साझा किया तो मेरे माध्यम से} परमेश्वर का आत्मा सामर्थी रूप से काम करता है।

5 {मैंने अपना सन्देश इस रीति से साझा किया} ताकि तुम {परमेश्वर पर} भरोसा करो क्योंकि वह सामर्थी रूप से कार्य करता है, इसलिए नहीं कि मनुष्यों ने {तुम से} बुद्धिमानी की बातें कीं।

6 {मैंने जो कहा है,} उसके बावजूद हम {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} उस समय बुद्धिमानी के साथ बोलते हैं जब हम आत्मिक रूप से परिपक्व लोगों के साथ होते हैं। हालाँकि, जो लोग केवल मानवीय रीति से सोचते हैं और जो लोग इस समय पर शासन करते हैं, उनको यह नहीं लगता कि हम बुद्धिमानी से बातें करते हैं। {शीघ्र ही,} ये लोग आगे को शासन नहीं करेंगे।

7 नहीं, हम बुद्धिमानी के साथ बातें इसलिए करते हैं {क्योंकि हम उन बातों की घोषणा करते हैं} जो परमेश्वर ने हम पर प्रकट की हैं। परमेश्वर ने इन बातों को {अब तक} छिपाए रखा था, यद्यपि उसने किसी भी वस्तु की सृष्टि करने से पहले ही उन बातों को करने का निर्णय कर लिया था। {उसने यह सब इसलिए किया} ताकि वह हमारा आदर करे।

8 जो लोग इस समय पर शासन करते हैं, उन्होंने इन बुद्धिमानी की बातों के बारे में नहीं जाना। {तुम बता सकते हो कि} वे इसलिए नहीं जानते, क्योंकि उन्होंने हमारे महिमामय प्रभु को क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला।

9 बजाए इसके, {जिस रीति से उन्होंने कार्य किया} वह भविष्यवक्ता यशायाह ने जो लिखा है उसके साथ उपयुक्त बैठता है: "जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उसने उन लोगों के लिए ऐसी बातों को तैयार किया है जिनको पहले किसी ने नहीं देखा और ऐसी बातें जिनके बारे में पहले किसी ने नहीं सुना और ऐसी बातें जिनकी किसी मनुष्य ने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी।"

10 परमेश्वर ने ये बातें हमें {परमेश्वर की} आत्मा {की सामर्थ्य} के द्वारा बताई हैं। {परमेश्वर अपनी आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा इसलिए कार्य करता है} क्योंकि परमेश्वर का आत्मा सभी

लोगों और बातों की खोज करता है। वह परमेश्वर के बारे में ऐसी बातों की भी खोज करता है जिन्हें समझना अत्यन्त कठिन है।

11 {परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर के बारे में सब बातों की खोजता है तुम यह इसलिए बता सकते हो,} क्योंकि हर कोई जानता है कि प्रत्येक मनुष्य ही केवल अपने बारे में सब कुछ समझता है। उसी रीति से, केवल परमेश्वर का आत्मा ही परमेश्वर के बारे में सब कुछ समझता है।

12 हम ने वास्तव में वह आत्मा प्राप्त किया है जो परमेश्वर की ओर से मिलता है। हमें ऐसा आत्मा नहीं मिला जो वर्तमान संसार से सम्बन्धित है। {हम ने परमेश्वर का आत्मा इसलिए प्राप्त किया} ताकि हम वह सब कुछ समझ सकें जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है।

13 हम भी इन्हीं बातों के बारे में बात करते हैं। हम उन बातों का उपयोग नहीं करते जिनको मनुष्य बुद्धिमानी के साथ सिखाते हैं। बजाए इसके, हम उन बातों का उपयोग करते हैं जो आत्मा सिखाता है, ताकि हम आत्मिक बातों के साथ आत्मिक सत्य की व्याख्या कर सकें।

14 अब, जिन लोगों के पास परमेश्वर का आत्मा नहीं है, वे उन बातों को अस्वीकार कर देते हैं जिनको परमेश्वर का आत्मा देता है और सिखाता है। {वे इन बातों को इसलिए अस्वीकार कर देते हैं,} क्योंकि वे सोचते हैं कि वे मूर्खता की बातें हैं। वे उन बातों के बारे में नहीं जान सकते {जिनको परमेश्वर का आत्मा देता है और सिखाता है,} क्योंकि जिनके पास परमेश्वर का आत्मा है, केवल वे लोग ही उनके बारे में सही न्याय कर सकते हैं।

15 दूसरी ओर, जिन लोगों के पास परमेश्वर का आत्मा है, वे हर बात के बारे में सही न्याय {कर सकते हैं}। हालाँकि, कोई भी {दूसरा} व्यक्ति उनके बारे में सही न्याय नहीं {कर सकता है}।

16 {पवित्रशास्त्र जो कहता है} यह उसके साथ उपयुक्त बैठता है: "कोई भी मनुष्य नहीं जानता कि प्रभु क्या सोच रहा है। कोई भी मनुष्य उसे किसी बात के बारे में नहीं सिखा सकता है।" हालाँकि, हम उन बातों को सोच सकते हैं जिनको मसीह सोच रहा है।

1 Corinthians 3:1

1 Corinthians 3:1

1 हे मेरे संगी विश्वासियों, {जब मैं तुम्हारे पास आया था, तब} मैं तुम को उस रीति से सिखाने में असमर्थ था जिस रीति से मैं उन लोगों को सिखाता था जिनके पास परमेश्वर का आत्मा है। बल्कि, {मुझे तुम को} उस रीति से सिखाना था जिससे मैं उन लोगों को सिखाऊँगा जो केवल मानवीय तरीकों से सोचते हैं। {मुझे यह इसलिए करना पड़ा} क्योंकि तुम ने अपरिपक्व तरीके से मसीह पर विश्वास किया है।

2 मैंने तुम को सरल बातों के बारे में सिखाया। मैंने तुम्हें जटिल बातों के बारे में नहीं सिखाया। {मैंने यह इसलिए किया} क्योंकि तुम जटिल शिक्षाओं के लिए तैयार नहीं थे। वास्तव में, तुम अभी भी जटिल शिक्षाओं के लिए तैयार नहीं हो।

3 {तुम जटिल शिक्षाओं के लिए तैयार नहीं हो, यह मैं इसलिए जानता हूँ} क्योंकि तुम अभी भी ऐसे लोग हो जो केवल मानवीय तरीकों से सोचते हैं। तुम में से कुछ एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, और तुम में से कुछ एक दूसरे से लड़ रहे हैं। जब तुम इन कामों को करते हो, तो इससे यह साबित होता है कि तुम ऐसे लोग हो जो केवल मानवीय तरीकों से सोचते हैं और जो केवल मानवीय तरीकों से कार्य करते हैं।

4 इसके अलावा, तुम में से कुछ लोग दावा कर रहे हैं कि उदाहरण के लिए, तुम पौलुस के समूह वाले हो, या यह कि तुम अपुल्लोस के समूह वाले हो। जब तुम इस प्रकार के दावे करते हो, तो इससे यह साबित होता है कि तुम केवल मानवीय तरीकों से सोच रहे हो और काम कर रहे हो।

5 तुम को यह समझने की आवश्यकता है कि अपुल्लोस और मैं, अर्थात पौलुस, केवल ऐसे लोग हैं जो {मसीह की} सेवा करते हैं। हम में से प्रत्येक वही काम करता है जिसे करने के लिए प्रभु ने हमें नियुक्त किया है। जब हम ने तुम को मसीह के बारे में बताया, तब तुम ने उस पर भरोसा किया था{, हम पर नहीं}।

6 {परमेश्वर ने} मुझे सबसे पहले तुम को शुभ सन्देश सुनाने के लिए नियुक्त किया। मैं तो उस व्यक्ति के समान था जो बीज बोता है। {परमेश्वर ने} अपुल्लोस को तुम्हें शुभ सन्देश के बारे में और भी अधिक प्रचार करने के लिए नियुक्त किया। वह उस व्यक्ति के समान था जो बीजों को सींचता है {ताकि वे बढ़ें}। हालाँकि, परमेश्वर ने तुम को स्वयं शुभ सन्देश पर विश्वास करने और उसे समझने में सक्षम बनाया है। उसी रीति से, पौधों को बढ़ाने वाला जन वही है।

1 Corinthians 3:1

7 तुम देख सकते हो कि जो व्यक्ति सबसे पहले लोगों को शुभ सन्देश सुनाता है, वह महत्वपूर्ण नहीं है। वह व्यक्ति जो लोगों को शुभ सन्देश के बारे में और भी अधिक प्रचार करता है, वह भी महत्वपूर्ण नहीं है। ये लोग उन लोगों के समान हैं जो बीज बोते हैं और जो पौधों को सींचते हैं, फिर भी वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। बजाए इसके, वह परमेश्वर ही है जो महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लोगों को शुभ सन्देश पर विश्वास करने और समझने में सक्षम बनाता है। उसी रीति से, वह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वही पौधों को बढ़ाता है।

8 वास्तव में, जो व्यक्ति सबसे पहले लोगों को शुभ सन्देश सुनाता है और जो व्यक्ति लोगों को शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करता है, उनके लक्ष्य एक जैसे ही होते हैं। वे उस व्यक्ति के समान हैं जो बीज बोता है और जो पौधों को सींचता है, उनके लक्ष्य भी एक जैसे ही होते हैं। परमेश्वर उन लोगों को पुरस्कार देगा जो इन दोनों में से कोई भी कार्य करते हैं। {वह उन्हें इस रीति से पुरस्कार देगा} जो उस काम के लिए उपयुक्त है जो उन्होंने किया है।

9 हम सब लोग {जो शुभ सन्देश सुनाते हैं} परमेश्वर के लिए काम करते हैं, परन्तु तुम परमेश्वर के हो। यह ऐसा है कि मानो तुम खेत की भूमि हो जिसका स्वामी परमेश्वर है{, जिसमें हम ने बीज बोए और सींचे}। वास्तव में, यह ऐसा है कि मानो तुम एक ऐसा घर हो जिसका स्वामी परमेश्वर है।

10 परमेश्वर ने मुझे सबसे पहले तुम्हें बुद्धिमानी के साथ शुभ सन्देश सुनाने का कौशल प्रदान किया। मैं उस निर्माण करने वाले मालिक के समान हूँ जो घर बनाने से पहले भूमि में नींव डालता है। {अपुल्लोस जैसे} दूसरे लोग, तुम्हें शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करते हैं। वे उन अन्य राजमिस्त्रियों के समान हैं जो उस नींव के ऊपर एक घर बनाते हैं। अंत में, वे सभी लोग जो शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ठीक रीति से इसका प्रचार करें। उन्हें उन राजमिस्त्रियों के समान होना चाहिए जो नींव के ऊपर सही तरीके से घर बनाते हैं।

11 कोई भी व्यक्ति तब उस भूमि में नींव नहीं डाल सकता यदि किसी दूसरे व्यक्ति ने पहले ही उस भूमि में नींव डाल रखी हो। वैसे ही, कोई भी और जन सबसे पहले तुम्हें शुभ सन्देश इसलिए सुना नहीं सकता, क्योंकि मैं तो पहले ही ऐसा कर चुका हूँ। मैंने तुम पर जो प्रचार किया है वह वही है {जो} यीशु मसीह {ने पूरा कर दिया है}। यीशु के बारे में यह सन्देश किसी घर की नींव के समान है।

12 राजमिस्त्री जब किसी घर की नींव पर निर्माण करते हैं तो वे कई अलग-अलग निर्माण सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। वे {अधिक टिकाऊ सामग्री जैसे} सोना, चाँदी, और जवाहरात, {और कम टिकाऊ सामग्री जैसे} लकड़ी, घास और पुआल का उपयोग कर सकते हैं। उसी रीति से, जो लोग शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करते हैं, उनमें से कुछ लोग ऐसी बातें सिखाते हैं जो परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करती हैं। दूसरे लोग ऐसी बातें सिखाते हैं जो परमेश्वर को कम प्रसन्न करती हैं।

13 जिस दिन मसीह सब का न्याय करने को लौटेगा, तब वह प्रकट करेगा कि प्रत्येक व्यक्ति ने किस प्रकार का कार्य किया है। भवन में आग लगने पर राजमिस्त्री द्वारा भवन निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्री की गुणवत्ता स्पष्ट हो जाती है। उसी रीति से, जब मसीह वापस लौटेगा उस दिन आग के समान न्याय होगा। यह न्याय उन बातों की गुणवत्ता को प्रकट करेगा जो शुभ सन्देश के बारे में और अधिक प्रचार करने वालों ने सिखाई हैं।

14 कोई भी राजमिस्त्री जिसने आग से बचने वाले भवन का निर्माण किया, उसे सम्मान और धन मिलता है। उसी रीति से, परमेश्वर उन सभी को सम्मान और पुरस्कार देगा जो शुभ सन्देश के बारे में उस प्रकार से और अधिक सिखाते हैं, जिसे सभी का न्याय करते समय परमेश्वर स्वीकार करता है।

15 कोई भी राजमिस्त्री जिसने ऐसे भवन का निर्माण किया हो जिसे आग भस्म कर दे, तो वह सम्मान और धन खो देता है। हालाँकि, वे राजमिस्त्री आग में नहीं मरते, बल्कि आग की लपटों से बच जाते हैं। उसी रीति से, जब परमेश्वर सभी का न्याय करता है, तो वह उन सभी को सम्मान या पुरस्कार नहीं देगा जो शुभ सन्देश के बारे में उस प्रकार से और अधिक सिखाते हैं, जिसे परमेश्वर स्वीकार नहीं करता। हालाँकि, परमेश्वर अभी भी इन शिक्षकों को उनके द्वारा सिखाई गई गलत बातों के बावजूद स्वीकार करेगा।

16 तुम को यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि तुम यरूशलेम में स्थित परमेश्वर के मन्दिर के समान हो {क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे मध्य में वैसे ही उपस्थित है जैसे वह मन्दिर में उपस्थित था}। तुम को यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि तुम उस घर के समान हो जिसमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है {क्योंकि वह हमेशा तुम्हारे साथ उपस्थित है}।

1 Corinthians 4:1

17 जो कोई उसके मन्दिर के विरुद्ध काम करेगा, परमेश्वर उस
व्यक्ति के विरुद्ध कार्यवाही करेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि
परमेश्वर का मन्दिर केवल उसी का है। {चूँकि} तुम परमेश्वर
के मन्दिर के समान हो{, इसलिए परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध काम
करने वाले किसी भी व्यक्ति के विरोध में कार्रवाई करेगा}।

18 जो बात तुम्हारे बारे में सच नहीं है उस पर विश्वास न करना।
तुम जो स्वयं को मानवीय मानकों के अनुसार बुद्धिमान
समझते हो, तुम्हें (मानवीय मानकों के अनुसार) मूर्ख बन
जाना चाहिए। इस रीति से, तुम {वास्तव में} बुद्धिमान मनुष्य
बन जाओगे।

19 {मैं ये बातें इसलिए बोलता हूँ} क्योंकि जिन बातों को मनुष्य
बुद्धिमानी समझते हैं, वे ऐसी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर मूर्खता
मानता है। {तुम जानते हो कि यह सच है} क्योंकि अय्यूब की
पुस्तक के लेखक ने लिखा है, "वह परमेश्वर ही है जो उन चतुर
युक्तियों को बाधित करता है जिनकी योजना बुद्धिमान लोग
बनाते हैं।"

20 इसके अलावा, {एक भजनकार ने लिखा}, "प्रभु हर उस
बात से अवगत है जिसकी योजना बुद्धिमान लोग बनाते हैं,
{और वह जानता है} कि ये योजनाएँ सफल नहीं होंगी।"

21 इसलिए, तुम में से किसी को भी इस बात पर घमण्ड नहीं
करना चाहिए कि {तुम अन्य लोगों का अनुसरण कैसे करते
हो}। {मैं यह इसलिए कहता हूँ} क्योंकि तुम्हारे पास सब कुछ
है{, इसलिए दूसरे मनुष्यों का अनुसरण करने के बारे में गर्व
करना मूर्खता है}।

22 तुम्हारे पास पौलुस, अपुल्लोस और पतरस {जैसे अगुवे} हैं।
तुम्हारे पास वह सब कुछ है जो परमेश्वर ने बनाया है, तुम
जीवन व्यतीत करते हुए {नहीं डरते}, और जब तुम मर जाते
हो {तो तुम आराम पा सकते हो}। तुम्हारे पास वह सब कुछ
है जो अभी अस्तित्व में है और वह सब कुछ भी जो भविष्य में
अस्तित्व में आएगा। वास्तव में, तुम्हारे पास सब कुछ है।

23 इसके अलावा, मसीह के पास तुम हो, और परमेश्वर के पास
मसीह है।

1 Corinthians 4:1

1 मैं चाहता हूँ कि लोग हमें वे समझें {जो शुभ सन्देश का प्रचार
करते हैं} अर्थात वे लोग जो मसीह की सेवा करते हैं और उस
बात का प्रचार करने वाले प्रभारी हैं जो परमेश्वर ने अब हम
पर प्रकट की है।

2 जब भी कोई अगुवा किसी अन्य व्यक्ति को प्रभारी बनाता
है, तो वह अगुवा उस व्यक्ति से अपने कामों को
विश्वासयोग्यता से करने की अपेक्षा करता है। {उसी रीति से,
परमेश्वर भी चाहता है कि हम जो शुभ सन्देश का प्रचार करते
हैं, अपना काम विश्वासयोग्यता से करें।}

3 मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तुम या कोई अन्य
मानवीय अधिकारी क्या निर्णय लेते हैं {इस बारे में कि मैंने
विश्वासयोग्यता से काम किया है या नहीं}। वास्तव में, मैं इस
बात की भी चिन्ता नहीं करता कि मैं स्वयं क्या निर्णय लेता हूँ
{इस बारे में कि मैंने विश्वासयोग्यता से काम किया है या नहीं}।

4 वास्तव में, मैंने जो कुछ भी गलत किया है, उसके बारे में मैं
नहीं जानता। हालाँकि, जो मैं अपने बारे में जानता हूँ वह यह
साबित नहीं करता कि मैंने विश्वासयोग्यता से काम किया है।
बल्कि, वह प्रभु ही है जो निर्धारित करेगा {कि मैंने
विश्वासयोग्यता से काम किया है या नहीं}।

5 इसलिए फिर, जब तक प्रभु {सब लोगों का और सब बातों
का न्याय करने के लिए} वापस नहीं आ जाता, तब तक तुम्हें
किसी भी बात के बारे में अंतिम निर्णय नहीं लेना चाहिए। जो
अभी छिपा हुआ है उसे वही स्पष्ट करेगा, और वह हर एक
जन पर उस बात को प्रकट करेगा जो प्रत्येक व्यक्ति चाहता
है और जिसकी योजना बनाता है। उस समय, परमेश्वर उस
प्रत्येक व्यक्ति की बड़ाई करेगा {जिसने विश्वासयोग्यता से
काम किया है}।

6 हे मेरे संगी विश्वासियों, मैंने तुम्हारे ही लाभ के लिए अपने
और अपुल्लोस के विषय में इस रीति से बात की है। मैं चाहता
हूँ कि तुम हमारे उदाहरण से सीखो कि तुम्हें केवल उन
तरीकों से ही काम करना चाहिए जो पवित्रशास्त्र के लेखकों
ने लिखे हैं। उस समय, कोई एक अगुवे के बारे में अच्छी बातें
और दूसरे अगुवे के बारे में बुरी बातें नहीं कहेगा।

7 किसी ने भी तुम्हें {हर दूसरे विश्वासी से} अलग नहीं किया
है। वास्तव में, जो तुम्हारे पास है वह सब कुछ परमेश्वर ने तुम
को दिया है। चूँकि ये वस्तुएँ परमेश्वर की ओर से वरदान हैं,
इसलिए तुम्हें घमण्ड के साथ यह नहीं कहना चाहिए कि तुम
ने स्वयं उन्हें अर्जित किया है।

8 {तुम तो ऐसे अभिनय कर रहे हो कि मानो} वर्तमान में तुम्हारे पास वह सब कुछ है जिसकी तुम्हें आत्मिक रूप से आवश्यकता है। {तुम तो ऐसे अभिनय कर रहे हो कि मानो} तुम्हारे पास वर्तमान में आवश्यकता से अधिक आत्मिक आशीषें हैं। {तुम तो ऐसे अभिनय कर रहे हो कि मानो} तुम ने वर्तमान में मसीह के साथ शासन करना आरम्भ कर दिया है, भले ही हम {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} अभी मसीह के साथ शासन नहीं कर रहे हैं। सचमुच, मैं चाहता हूँ कि तुम वास्तव में उसके साथ शासन करो, ताकि हम {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} तुम्हारे साथ शासन कर सकें।

9 {यह सोचने के बजाए कि हम अब मसीह के साथ शासन करते हैं}, मैं हम प्रेरितों को ऐसे लोग मानता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने अपमान सहने और मरने के लिए नियुक्त किया है। हम सार्वजनिक रूप से अपमान सहते हैं और मर जाते हैं, और जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है, जिसमें आत्मिक प्राणी और मनुष्य भी शामिल हैं, हमें देख सकते हैं।

10 हम मूर्ख लोग इसलिए {प्रतीत} होते हैं क्योंकि हम मसीह की सेवा करते हैं, परन्तु {तुम सोचते हो कि} तुम बुद्धिमान लोग इसलिए हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें मसीह के साथ एकजुट करता है। हम ऐसे लोग {प्रतीत} होते हैं जिनके पास शक्ति या प्रभाव नहीं है, परन्तु {तुम्हें लगता है कि} तुम्हारे पास ये वस्तुएँ हैं। {तुम्हें लगता है कि} लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं, परन्तु वही लोग हमें लज्जित करते हैं।

11 अब भी {जब मैं यह पत्री तुम्हें लिखता हूँ}, हम ने {जिन्हें मसीह ने भेजा है} अक्सर न पर्याप्त भोजन खाया है और न पानी पिया है। हम फटे-पुराने कपड़े पहनते हैं, और दूसरे लोग हम पर बार-बार प्रहार करते हैं। हम लगातार यात्रा करते हैं और घर नहीं लौटते।

12 हम {जीविका कमाने के लिए} शारीरिक श्रम करते हैं। जब लोग हम से बुरी बातें बोलते हैं तो हम उनके बारे में अच्छी बातें कहते हैं। जब लोग हमें चोट पहुँचाते हैं {इसलिए क्योंकि हम मसीह की सेवा करते हैं}, तो हम धैर्यपूर्वक इसमें होकर जीवन व्यतीत करते हैं।

13 जब लोग हमारे बारे में बुरी बातें बोलते हैं, तो हम उन्हें प्रोत्साहित करने वाली बातें कहते हैं। मानवीय दृष्टिकोण से, हम गंदे कचरे के समान बेकार हैं जिसे कोई फेंक दे। {ये सभी बातें हमारे बारे में सच हैं} इस समय पर भी {जब मैं तुम्हें यह पत्री लिखता हूँ}।

14 जो कुछ मैंने अभी कहना समाप्त किया है उसे मैं अपनी पत्री में इसलिए शामिल नहीं करता क्योंकि मैं तुम्हें लज्जित करना चाहता हूँ। बल्कि, {मैं इन बातों को इसलिए शामिल करता हूँ} क्योंकि मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहता हूँ, क्योंकि तुम मेरे अपने बालकों के समान हो, जिनसे मैं प्रेम करता हूँ।

15 जब मैंने सबसे पहले तुम्हें शुभ सन्देश सुनाया, और परमेश्वर ने तुम्हें यीशु मसीह के साथ एकजुट कर दिया, तो मैं तुम्हारा आत्मिक पिता बन गया। इसलिए, भले ही तुम्हारे लाखों शिक्षक रहे हों जिन्होंने तुम्हें मसीह के साथ जुड़कर रहने में सहायता की हो, फिर भी मैं तुम्हारा एकमात्र आत्मिक पिता होऊँगा।

16 क्योंकि {मैं तुम्हारा आत्मिक पिता हूँ इसलिए}, मैं तुम से विनती करता हूँ कि जैसे मैं जीवन व्यतीत करता हूँ तुम उसका अनुकरण करो।

17 क्योंकि {मैं चाहता हूँ कि तुम मेरा अनुकरण करो इसलिए}, मैंने तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा। वह मेरे अपने बालक के समान है, और मैं उससे प्रेम करता हूँ। वह विश्वासयोग्यता से उस व्यक्ति के समान {मसीह की सेवा करता है} जिसे परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है। वह तुम्हें फिर से सिखाएगा कि मैं कैसे उस व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ जिसे परमेश्वर ने मसीह यीशु के साथ एकजुट किया है। मैं हर जगह हर कलीसिया को {जिनमें मैं जाता हूँ} निर्देश देता हूँ कि इन तरीकों से व्यवहार करो।

18 तुम में से कुछ लोग तुम्हारे बारे में बड़ी-बड़ी बातें कह रहे हैं। ये लोग ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो मैं तुम से मिलने आने वाला नहीं था।

19 हालाँकि, मैं अति शीघ्र ही तुम से मिलने आऊँगा, जब तक कि {मेरे ऐसा करने को} प्रभु की इच्छा हो। मुझे पहले से ही पता है कि ये लोग जो अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहते हैं, वे क्या दावा करते हैं। {जब मैं तुम से मिलने आऊँगा}, तब मैं जानूँगा कि वे वास्तव में शक्तिशाली हैं या नहीं।

20 {मैं यह इसलिए करूँगा} क्योंकि परमेश्वर का राज्य परमेश्वर के द्वारा कार्य करता है, जो लोगों के माध्यम से सामर्थी रूप से कार्य करता है, न कि लोगों द्वारा बड़ी-बड़ी बातें कहने के द्वारा।

21 जब तुम चुनाव करते हो कि मैं जो कह रहा हूँ उस पर तुम कैसी प्रतिक्रिया दोगे, तो तुम यह चुनाव भी कर रहे हो कि {जब मैं मिलने आऊँगा} तो मैं कैसे कार्य करूँगा। जब मैं तुम से मिलने आऊँगा, तब या तो मैं तुम्हें कठोरता से अनुशासित कर सकता हूँ {इसलिए क्योंकि तुम ने सुना नहीं}, या मैं कोमलता से और प्रेम से कार्य कर सकता हूँ {इसलिए क्योंकि तुम ने सुन लिया है}।

1 Corinthians 5:1

1 मुझे मालूम हुआ है कि तुम वास्तव में अपने समूह के लोगों को अनुचित यौन सम्बन्ध बनाने की अनुमति दे रहे हो। यहाँ तक कि जो लोग परमेश्वर की आराधना नहीं करते, वे भी उन कुछ बातों की अनुमति नहीं देते जिनकी तुम अनुमति देते हो। {सबसे बुरी बात जो मुझे मालूम हुई} वह यह है कि तुम्हारे समूह का एक पुरुष अपनी सौतेली माता के साथ यौन सम्बन्ध बना रहा है।

2 {इसके बावजूद,} {उस पाप} पर विलाप करने के बजाए तुम अभी भी अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें बोलते हो। इस यौनाचार के पाप को करने वाले पुरुष को निष्कासित करने के लक्ष्य को निर्धारित करके {तुम्हें विलाप करना चाहिए था}।

3 {तुम्हें उसे निष्कासित इसलिए करना चाहिए} क्योंकि मैंने पहले से ही उस पुरुष को दोषी घोषित कर दिया है जिसने यह दुष्ट काम किया है। यद्यपि मैं शारीरिक रूप से तुम्हारे साथ नहीं हूँ, परन्तु मैं तुम्हारे बारे में विचार करता हूँ और तुम्हारी चिन्ता करता हूँ। {इसलिए, जब मैं इस पुरुष को दोषी घोषित करता हूँ, तो यह उतना ही मान्य है} कि मानो मैं तुम्हारे साथ था।

4 जब तुम इकट्ठे होते हो, और मैं तुम्हारे विषय में विचार करता हूँ, तो हम अपने प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं। {जब तुम इस रीति से इकट्ठे होते हो, तो तुम्हें इस पुरुष को दण्डित करना चाहिए} जैसा करने के लिए हमारा प्रभु यीशु तुम को अधिकृत करता है।

5 तुम्हें इस पुरुष को निष्कासित कर देना चाहिए ताकि शैतान उस पर शासन करे। वह उसके पापी अंगों को नष्ट कर देगा, और जब प्रभु लौटेगा तब परमेश्वर उसे बचाएगा।

6 अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें कहना सही काम नहीं है। निश्चय ही तुम जानते हो कि बुरे काम करने वाला एक व्यक्ति ख़मीरी आटे के समान होता है। थोड़ा सा ख़मीरी आटा भी पूरे गूँधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है, और एक व्यक्ति भी बुरे काम करने से सम्पूर्ण कलीसिया को दोषी बना देता है।

7 जिस प्रकार यहूदी {फसह के पर्व के दौरान} अपने घरों से ख़मीर निकाल देते हैं, उसी प्रकार से जो कोई बुरे काम करता है, उसे तुम्हें अपने समूह से निकाल देना चाहिए। तब, तुम पाप से ऐसे स्वतंत्र हो जाओगे, जैसे ताजा, अख़मीरी आटा ख़मीर से स्वतंत्र होता है। वास्तव में, तुम ऐसे समय में रह रहे हो जो फसह के पर्व के समान है। {ऐसा इसलिए है क्योंकि} मसीह तुम्हारे लिए ठीक उसी प्रकार से मर गया, जैसे वह मेम्ना जिसे यहूदी लोग फसह के पर्व के दौरान बलिदान चढ़ाते हैं, यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे बचाया।

8 क्योंकि {मसीह हमारे लिए मरा इसलिए}, आओ हम ऐसा व्यवहार करें कि मानो हम फसह के पर्व में भाग ले रहे हों और पुराने ख़मीर को हटा दें। हमें उस ख़मीर से छुटकारा पाना है, जिसका अर्थ बुराई और दुष्टता के काम करना है। बजाए इसके, हमें बिना अख़मीरी रोटी खानी है, जिसका अर्थ ईमानदार और विश्वसनीय काम करना है।

9 उस पत्री में {जो मैंने तुम्हें इससे पहले भेजी थी}, मैंने तुम से कहा था कि तुम ऐसे लोगों के साथ संगति न करो जो यौनाचार में अनुचित तरीकों से व्यवहार करते हैं।

10 {मेरे कहने का अर्थ यह} नहीं {था कि तुम्हें} पूर्णरूप से ऐसे अविश्वासी लोगों के साथ {संगति करना छोड़ देना} चाहिए जो यौनाचार में अनुचित तरीकों से व्यवहार करते हैं, या ऐसे लोगों के साथ जो आवश्यकता से अधिक की चाह करते हैं या जो दूसरों को धोखा देते हैं, या ऐसे लोगों के साथ जो झूठे देवताओं की उपासना करते हैं। इस प्रकार के लोगों से बचने के लिए तो तुम्हें सम्पूर्ण संसार से ही दूर जाना पड़ेगा। {यह वह बात नहीं है जो मैंने तुम्हें करने की आज्ञा दी है।}

11 अब, इस पत्री में, मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ संगति न रखना जिसे तुम एक संगी विश्वासी कहते हो और जो पापी व्यवहार कर रहा है। इसमें अनुचित यौन सम्बन्ध बनाना, एक से अधिक आवश्यकताओं की इच्छा करना, अन्य देवताओं की उपासना करना, दूसरों को बातों में गाली देना, नशे में होना और दूसरों से धोखा करना शामिल है। ऐसे व्यक्ति के साथ तो भोजन भी न करना जो इन कामों में से कुछ भी करता हो।

12 {मैं चाहता हूँ कि तुम केवल संगी विश्वासियों के साथ इस रीति से व्यवहार करो,} क्योंकि {तुम्हें और} मुझे यह निर्धारित

करने की आवश्यकता नहीं है कि कोई व्यक्ति जो हमारे समूह का भाग नहीं है, वह दोषी है या निर्दोष। बल्कि, तुम्हें यह निर्धारित करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि जो लोग तुम्हारे समूह के भाग हैं, वे दोषी हैं या निर्दोष।

13 {उन लोगों के बारे में चिन्ता न करना जो तुम्हारे समूह का भाग नहीं हैं क्योंकि} वह परमेश्वर ही है जो निर्धारित करता है कि वे दोषी हैं या निर्दोष। {तुम्हें उन लोगों पर ध्यान देना है जो तुम्हारे समूह का भाग हैं क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है,} "तुम्हें ऐसे किसी भी बुरे व्यक्ति से छुटकारा पाना है जो तुम्हारे समूह का भाग है!"

1 Corinthians 6:1

1 जब तुम्हारे समूह का कोई जन तुम्हारे समूह के किसी अन्य व्यक्ति के साथ झगड़ा करता है, तो तुम्हें कभी भी {सार्वजनिक अदालत में} उन लोगों के सामने झगड़ा नहीं निपटाना चाहिए जो विश्वास नहीं करते हैं। बल्कि, ऐसे लोगों के मध्य में {तुम्हें झगड़े को अकेले में निपटाना चाहिए} जिन्हें परमेश्वर ने अपने लिए अलग किया है।

2 निश्चय ही तुम जानते हो कि जिन लोगों को परमेश्वर ने अपने लिये अलग किया है, वे ही निर्धारित करेंगे कि परमेश्वर ने जो वस्तुएँ और लोग बनाए हैं, वे दोषी हैं या निर्दोष। चूँकि तुम ही निर्धारित करोगे कि ये सब वस्तुएँ और लोग दोषी हैं या निर्दोष, इसलिए तुम निश्चित रूप से {अपने समूह के भीतर} छोटे-छोटे झगड़ों के बारे में निर्णय ले सकते हो।

3 तुम्हें यह समझने की आवश्यकता है कि हम ही निर्धारित करेंगे कि स्वर्गदूत निर्दोष हैं या दोषी। {चूँकि हम ही ऐसा करेंगे, इसलिए} हम निश्चित रूप से अपने वर्तमान जीवन से सम्बन्धित विवादों के बारे में निर्णय लेने में सक्षम हैं।

4 इसलिए, जब भी तुम अपने वर्तमान जीवन के सम्बन्ध में एक दूसरे के साथ झगड़ा करते हो, तो तुम्हें उन लोगों को जो तुम्हारे विश्वासियों के समूह का भाग नहीं हैं, यह निर्धारित करने के लिए नहीं चुनना चाहिए कि कौन दोषी है और कौन निर्दोष है।

5 जो कुछ मैंने अभी कहा है उसे मैं इसलिए शामिल करता हूँ ताकि तुम्हें लज्जित महसूस कराऊँ। निश्चय ही तुम्हारे समूह में ऐसे लोग भी हैं जो इतने बुद्धिमान तो हैं कि संगी विश्वासियों के मध्य के विवादों के बारे में निर्णय लेने में समर्थ हैं।

6 परन्तु बजाए इसके, तुम में से कुछ विश्वासी अन्य विश्वासियों पर कानूनी अदालत में आरोप लगाते हैं, और वे लोग विवाद को सुलझाते हैं जो विश्वास नहीं करते।

7 क्योंकि तुम्हारे एक-दूसरे के साथ विवाद हैं, इसलिए तुम पहले ही यीशु का अनुसरण करने में पूरी रीति से विफल हो चुके हो। बल्कि {इस रीति से विफल होने के बजाए}, तुम्हें संगी विश्वासियों को क्षमा करना चाहिए जब वे तुम्हें हानि पहुँचाते हैं या तुम्हें धोखा देते हैं।

8 बल्कि {दूसरों को क्षमा करने के बजाए}, हालाँकि तुम ने {अन्य लोगों} को हानि पहुँचाई है और उन्हें धोखा दिया है। वास्तव में, तुम ने इन कामों को संगी विश्वासियों के साथ {किया है}!

9 {मैं स्तब्ध हूँ कि तुम इन कामों को करते हो} भले ही तुम्हें मालूम है कि जो लोग दूसरों को हानि पहुँचाते हैं वे परमेश्वर के राज्य में भागी नहीं होंगे। जो कोई तुम्हें कुछ और बात बताए उस पर विश्वास न करना। कोई भी जन जो अनुचित यौन सम्बन्ध बनाता है या जो अन्य देवताओं की उपासना करता है या जो किसी विवाहित व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध बनाता है या जो समान लिंग के व्यक्ति के साथ यौन क्रियाओं में भाग लेता है या जो समान लिंग के व्यक्ति के साथ यौन क्रिया करता है

10 या जो दूसरों का सामान चोरी करता है या जो अपनी आवश्यकताओं से अधिक की चाह करता है या जो नशे में धुत हो जाता है या जो दूसरों को बातों से गाली देता है या जो दूसरों को धोखा देता है, वह परमेश्वर के राज्य में भागी नहीं होगा।

11 तुम में से कुछ लोग इस रीति से व्यवहार किया करते थे। हालाँकि, अब परमेश्वर ने तुम्हें शुद्ध किया है, उसने तुम्हें पवित्र बनाया है, और उसने तुम्हें निर्दोष घोषित किया है। {तुम इन बातों का अनुभव इसलिए करते हो} क्योंकि {उन्हें तुम्हें देने के लिए} प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा सामर्थी रूप से कार्य करते हैं।

12 {तुम में से कुछ कहते हैं,} "मैं कुछ भी कर सकता हूँ और मैं दोषी नहीं ठहरूँगा।" हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} कुछ बातें {किसी के लिए भी} सहायक नहीं होती हैं। {फिर से, तुम में से कुछ कहते हैं,} "मैं कुछ भी कर सकता हूँ और मैं दोषी

1 Corinthians 7:1

नहीं ठहरूँगा।" हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} मैं ऐसी किसी भी वस्तु की सेवा नहीं करूँगा जो मुझे अपना दास बना ले।

13 {तुम में से कुछ लोग कहते हैं,} "भोजन का अस्तित्व किसी व्यक्ति के पेट के लिए होता है कि वह उसे पचाए, और किसी व्यक्ति के पेट का अस्तित्व इसलिए होता है कि भोजन को पचाए।" वास्तव में, {मैं यह भी कहता हूँ कि} परमेश्वर भोजन और पेट को महत्वहीन बना देगा। {जबकि यह सत्य है कि भोजन का अस्तित्व किसी व्यक्ति के पेट के लिए होता है,} मानव शरीर का अस्तित्व किसी व्यक्ति के लिए नहीं है कि वह उसके साथ अनुचित यौन सम्बन्ध बनाए। बजाए इसके, {मानव शरीर का} अस्तित्व प्रभु की सेवा करने के लिए है, और प्रभु ने मानव शरीर के उद्धार के लिए काम किया है।

14 वास्तव में, परमेश्वर ने प्रभु को फिर से जीवित किया, और वह हमें भी फिर से जीवित करने के लिए सामर्थी रूप से कार्य करेगा।

15 निश्चय ही तुम जानते हो कि तुम्हारे शरीर मसीह के हैं, जैसे कि मानो तुम उसके शरीर के अंग हो। इस कारण से, तुम्हें अपना शरीर वापस लेकर फिर इसे एक वेश्या को नहीं देना चाहिए, जिससे कि तुम्हारा शरीर उसका हो जाए, जैसे कि मानो तुम उसके शरीर के अंग हो। ऐसा कभी न करना!

16 निश्चित रूप से तुम जानते हो कि जो पुरुष किसी वेश्या के साथ यौन सम्बन्ध बनाता है, वह स्वयं को उसके साथ इतनी निकटता से एकजुट करता है जैसे कि मानो वे एक ही शरीर साझा करते हों। {तुम्हें यह इसलिए पता होना चाहिए} क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, "{पुरुष और स्त्री, यद्यपि} दो लोग हैं, परन्तु वे एक व्यक्ति {के समान} बन जाएँगे।"

17 इसी रीति से, कोई भी व्यक्ति जो स्वयं को प्रभु के साथ एकजुट कर लेता है, वह आत्मिक रूप से {प्रभु के साथ} एक हो जाता है।

18 जानबूझकर अनुचित यौन सम्बन्ध बनाने से बचें। जब लोग पाप करते हैं, तो वे आमतौर पर अपनी देह को प्रत्यक्ष रूप से चोट पहुँचाए बिना ऐसा करते हैं। हालाँकि, जब लोग अनुचित यौन सम्बन्ध बनाते हैं, तो वे अपनी स्वयं की देह को चोट पहुँचाते हैं।

19 निश्चय ही तुम जानते हो कि परमेश्वर ने तुम्हें पवित्र आत्मा दिया है। इसलिए, तुम्हारे शरीर पवित्र आत्मा के लिए मन्दिरों के समान हैं, क्योंकि वह स्वयं को तुम्हारे साथ एकजुट करता है {जैसे कोई ईश्वर स्वयं को अपने मन्दिर के साथ एकजुट करता है}। इस कारण से, तुम स्वयं के नहीं हो।

20 {बल्कि, तुम परमेश्वर के इसलिए हो, क्योंकि मसीह तुम्हारे लिए मरा। जब वह तुम्हारे लिए मरा,} तो ऐसा लगा कि मानो परमेश्वर ने तुम्हें मोल लेने के लिए दाम दिया हो। क्योंकि {तुम परमेश्वर के हो}, इसलिए जब भी तुम अपनी देह से कुछ करो तो तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिए।

1 Corinthians 7:1

1 तुम ने जो मुझ से पूछा उसके बारे में आगे बढ़ते हुए, तुम ने अपनी पत्री में कहा कि लोगों के लिए एक-दूसरे के साथ यौन सम्बन्ध न बनाना उचित है।

2 दूसरी ओर, लोग अक्सर यौन सम्बन्ध बनाने की, यहाँ तक कि अनुचित यौन सम्बन्ध बनाने की भी इच्छा रखते हैं। इस कारण से, एक पति को अपनी ही पत्नी से विवाहित रहना चाहिए और एक पत्नी को अपने ही पति से विवाहित रहना चाहिए।

3 पतियों को नियमित रूप से अपनी पत्नियों के साथ यौन सम्बन्ध बनाना चाहिए। इसी रीति से, पत्नियों को भी नियमित रूप से अपने पति के साथ यौन सम्बन्ध बनाना चाहिए।

4 पत्नियों के शरीर उनके नहीं, परन्तु उनके पति के होते हैं। इसी रीति से, पतियों का शरीर उनका नहीं, परन्तु उनकी पत्नियों का होता है।

5 तुम को नियमित रूप से यौन सम्बन्ध बनाना तभी बंद करना चाहिए जब तुम दोनों थोड़े समय के लिए ऐसा करने के लिए सहमत हो। तुम को ऐसा तभी करना चाहिए जब तुम परमेश्वर से प्रार्थना करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहो, और शीघ्र ही तुम्हें नियमित रूप से यौन सम्बन्ध बनाना आरम्भ कर देना चाहिए। यदि तुम इसे शीघ्रता से नहीं करते हो, तो शैतान तुम्हें गलत काम करने को लुभाने के लिए यौन सम्बन्ध बनाने की तुम्हारी इच्छा का उपयोग करेगा।

6 मैं तुम्हें {प्रार्थना पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए नियमित रूप से यौन सम्बन्ध बनाना बंद करने} की आज्ञा नहीं देता। बल्कि, मैं तुम्हें केवल {ऐसा करने की} अनुमति दे रहा हूँ।

1 Corinthians 7:1

7 यदि यह मेरे ऊपर होता, तो सभी लोग मेरे जैसे होते {और अविवाहित रहते}। हालाँकि, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन व्यतीत करने का अपना तरीका देता है। कुछ लोग एक तरीके से {जीवन व्यतीत करते हैं}, जबकि अन्य लोग दूसरे तरीके से {जीवन व्यतीत करते हैं}।

8 यहाँ मैं उन लोगों से बात कर रहा हूँ जिन्होंने विवाह नहीं किया है और उन स्त्रियों से भी जिनके पतियों की मृत्यु हो गई है। {इन लोगों के लिए} मेरे समान {अविवाहित} रहना सबसे अच्छी बात है।

9 हालाँकि, कुछ लोगों को इसे नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा जैसे वे यौन सम्बन्ध बनाने की इच्छा करते हैं। इन लोगों को विवाह इसलिए कर लेना चाहिए, क्योंकि लगातार यौन सम्बन्ध बनाने की इच्छा रखने से बेहतर यह विकल्प है।

10 यहाँ मैं वही कह रहा हूँ जो प्रभु ने स्वयं उन लोगों से कहा जिनका विवाह हो चुका है। मैं चाहता हूँ कि पत्नियाँ अपने पतियों के साथ रहें।

11 अब जब वे अपने पतियों के साथ नहीं रहतीं, तो उन्हें फिर से विवाह नहीं करना चाहिए, या उन्हें अपने पतियों के पास वापस चले जाना चाहिए। इसके अलावा, पतियों को भी अपनी पत्नियों के साथ रहना चाहिए।

12 अब तुम में से उन बचे हुओं के लिए {जिनके पास ऐसा जीवनसाथी है जो विश्वासी नहीं है}, परमेश्वर ने इसके बारे में नहीं बोला, इसलिए मैं वही कह रहा हूँ जिसका मैं स्वयं आदेश देता हूँ। कुछ संगी विश्वासियों की पत्नियाँ अविश्वासी हैं, और शायद वे पत्नियाँ अपने विश्वासी पतियों के साथ रहना चाहती हों। इस परिस्थिति में, उन पतियों को अपनी पत्नियों के साथ ही रहना चाहिए।

13 इसी रीति से, कुछ संगी विश्वासीनियों के पति अविश्वासी होते हैं, और शायद वे पति अपनी विश्वासी पत्नियों के साथ रहना चाहते हों। इस परिस्थिति में, उन पत्नियों को अपने पति के साथ ही रहना चाहिए।

14 {तुम्हें अपने अविश्वासी पति या पत्नी के साथ इसलिए रहना चाहिए,} क्योंकि परमेश्वर अविश्वासी पति को विश्वास करने वाली पत्नी के लिए स्वीकार्य जीवनसाथी मानता है। इसी रीति से, परमेश्वर अविश्वासी पत्नी को विश्वास करने वाले पति के लिए स्वीकार्य जीवनसाथी मानता है। इस कारण से, परमेश्वर इस स्थिति में बच्चों के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह दो विश्वास करने वाले माता-पिता के बच्चों के साथ करता है। यदि मैंने जो कहा वह सत्य न हो, तो भी इस परिस्थिति में परमेश्वर उन बच्चों के साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा वह दो अविश्वासी माता-पिता के बच्चों के साथ करता है।

15 दूसरी ओर, शायद कुछ अविश्वासी पति या पत्नियाँ अपने विश्वास करनेवाले जीवनसाथी को छोड़ना चाहें। इस परिस्थिति में, विश्वास करने वाले जीवनसाथी को उन्हें जाने देना चाहिए। विश्वास करने वाले जीवनसाथी को अपने अविश्वासी पति या पत्नी के साथ रहने की आवश्यकता नहीं है। {इस प्रकार की किसी भी परिस्थिति में, स्मरण रखो कि} परमेश्वर चाहता है कि हम शान्तिपूर्ण लोग हों।

16 {तुम्हें एक अविश्वासी जीवनसाथी को इसलिए जाने देना चाहिए} क्योंकि प्रत्येक पत्नी यह नहीं जानती कि वह अपने पति को यीशु पर विश्वास करने में सहायता कर सकती है या नहीं। प्रत्येक पति भी यह नहीं जानता कि वह अपनी पत्नी को यीशु पर विश्वास करने में सहायता कर सकता है या नहीं।

17 सामान्य रूप से, सभी लोगों को उन तरीकों से वर्ताव करने की आवश्यकता होती है जिसे करने के लिए प्रभु ने उन्हें नियुक्त किया है और जिस प्रकार से परमेश्वर उनसे व्यवहार करने की अपेक्षा करता है। मैं चाहता हूँ कि लोग विश्वासियों के प्रत्येक समूह में {जिसके पास मैं जाता हूँ} इस शिक्षा का पालन करें।

18 कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका यीशु पर विश्वास करने से पहले दूसरों ने खतना किया था। इन लोगों को फिर से खतनारहित बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसे अन्य लोग भी हैं जिनका यीशु पर विश्वास करने से पहले दूसरों ने खतना नहीं किया था। इन लोगों को भी खतना करवाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

19 किसी व्यक्ति ने उनका खतना करवाया है या नहीं, यह {हमारे लिए और परमेश्वर के लिए} कोई मायने नहीं रखता। दूसरी ओर, जो परमेश्वर हम से चाहता है वह करना {हमारे लिए और परमेश्वर के लिए मायने रखता है}।

1 Corinthians 7:1

20 सब लोगों को परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता से करनी चाहिए, उन सामान्य कामों करते हुए जिनको वे पहले से ही कर रहे थे जब परमेश्वर ने उन्हें बदला था।

21 कुछ लोग उस समय दास थे जब उन्होंने यीशु पर विश्वास किया। इन लोगों को अपने दास होने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। दूसरी ओर, उन्हें स्वतंत्र होने के किसी भी अवसर का उपयोग करना चाहिए।

22 {अपनी सामाजिक स्थिति के बारे में चिन्ता न करना,} क्योंकि जो लोग दास थे, जब उन्होंने उस पर विश्वास किया तो अब प्रभु उन सभी लोगों को स्वतंत्र लोग मानता है। इसी रीति से, मसीह उन सभी लोगों को जो स्वतंत्र लोग थे, जब उन्होंने उस पर विश्वास किया तो ऐसे मानता है कि वे अब उसके दास हैं।

23 {जब यीशु तुम्हारे लिए मरा,} तो ऐसा लगा कि मानो परमेश्वर ने तुम्हें मोल लेने के लिए दाम दिया हो। {इस कारण से,} तुम्हें अन्य मनुष्यों की नहीं, परन्तु एकमात्र परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।

24 हे मेरे संगी विश्वासियों, सब लोगों को परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता से करनी चाहिए, उन सामान्य कामों करते हुए जिनको वे पहले से ही कर रहे थे जब परमेश्वर ने उन्हें बदला था।

25 अब मैं उन लोगों के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ जिन्होंने विवाह नहीं किया है। इस मुद्दे पर, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो प्रभु ने तुम से कहने को बोला हो। हालाँकि, मैं तुम्हें वही बताऊँगा जो मुझे सबसे अच्छा लगता है। {मैं यह इसलिए करता हूँ} क्योंकि परमेश्वर ने मुझे एक विश्वसनीय {शिक्षक} बनाने के द्वारा मुझ पर दयालु होकर कार्य किया है।

26 मेरा सुझाव है कि लोगों को अपने जीवन व्यतीत करने के तरीके को नहीं बदलना चाहिए। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि शीघ्र ही भयानक बातें होने वाली हैं।

27 कुछ लोगों ने मंगनी कर ली है। उन्हें अलग नहीं होना चाहिए। दूसरे लोगों ने कभी मंगनी नहीं की। उन्हें मंगनी करने का प्रयास भी नहीं करना चाहिए।

28 हालाँकि, एक अकेला पुरुष या अकेली स्त्री जो विवाह करते हैं वे पाप नहीं करते। मैं तुम्हें केवल विवाह करने के विरुद्ध सलाह इसलिए देता हूँ क्योंकि जो लोग विवाह करते हैं उन्हें जीवन व्यतीत करते हुए परेशानी का अनुभव होगा।

29 हे मेरे संगी विश्वासियों, जो मैं तुम्हें बताने वाला हूँ {वह महत्वपूर्ण है}। अंत का समय दूर नहीं है। इसलिए, तब तक, प्रत्येक पुरुष जिसके पास पत्नी है, उसे ऐसे पुरुष के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जिसके पास पत्नी नहीं है।

30 रोने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उस व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जो रोता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति जो आनन्दित है, उसे ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जो आनन्दित नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास कुछ है उसे ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जिसके पास कुछ भी नहीं है।

31 प्रत्येक व्यक्ति जो सांसारिक वस्तुओं का उपयोग करता है, उसे ऐसे व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए जो इन वस्तुओं का उपयोग नहीं करता है। {तुम्हें इन तरीकों से इसलिए व्यवहार करना चाहिए} क्योंकि परमेश्वर शीघ्र ही कामों को करने के सांसारिक तरीके को समाप्त कर देगा।

32 मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ बातों की चिन्ता करो। अविवाहित पुरुष इस बारे में चिन्ता करें कि वे प्रभु की सेवा करने के लिए क्या कर सकते हैं।

33 दूसरी ओर, विवाहित पुरुष सांसारिक बातों के बारे में चिन्ता करते हैं, विशेषकर कि वे अपनी पत्नियों की सेवा कैसे कर सकते हैं। इस कारण से, वे दो अलग-अलग बातों के बारे में चिन्ता करते हैं{: अपनी पत्नियों की सेवा करना और प्रभु की सेवा करना}। अविवाहित स्त्रियाँ और ऐसी स्त्रियाँ जिन्होंने कभी विवाह नहीं किया

34 वे इस बारे में चिन्ता करती हैं कि वे प्रभु की सेवा करने के लिए क्या कर सकती हैं। उनका लक्ष्य पूर्णरूप से पवित्र होना है। दूसरी ओर, विवाहित स्त्रियाँ सांसारिक बातों के बारे में चिन्ता करती हैं, विशेषकर कि वे अपने पतियों की सेवा कैसे कर सकती हैं।

35 मैंने ये बातें इसलिए कही क्योंकि मैं सोचता है कि ये बातें तुम्हारे लिए सहायक हैं। मैं तुम्हें केवल एक ही प्रकार से व्यवहार करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहता। बजाए

इसके, मैं चाहता हूँ कि तुम सम्मानपूर्वक व्यवहार करने में सक्षम बनो और अच्छी रीति से एवं ध्यानपूर्वक प्रभु की सेवा करो।

36 कुछ मामलों में, एक मंगनी किया हुआ पुरुष यह सोच सकता है कि वह अपनी मंगेतर के साथ यौनचार के अनुचित तरीके से व्यवहार कर सकता है। इसके अलावा, उसकी मंगेतर पूर्णरूप से सयानी हो सकती है और यौन सम्बन्ध बनाने के लिए तैयार हो सकती है। इन मामलों में, यहाँ क्या करना है: उस पुरुष को अपनी मंगेतर से विवाह कर लेना चाहिए। {जब वह ऐसा करता है तो} वह पाप नहीं करता, और उन दोनों को विवाह कर लेना चाहिए।

37 अन्य मामलों में, शायद मंगनी किए हुए पुरुष ने अपना मन बना लिया हो, और किसी व्यक्ति या बात ने उसे {विवाह न करने के लिए} बाध्य किया हो। वह अपनी इच्छा को नियंत्रित कर सकता है, और उसने {विवाह न करने का} निर्णय स्वयं लिया है। इस मामले में, वह न्यायानुसार अपनी मंगेतर से विवाह नहीं करने का चुनाव कर सकता है।

38 अंत में, कोई भी पुरुष जो अपनी मंगेतर से विवाह करता है, एक अच्छा काम करता है। इसके अलावा, कोई भी पुरुष जो {अपनी मंगेतर से} विवाह नहीं करता है, एक बेहतर काम करता है।

39 पत्नियों को अपने पतियों के साथ तब तक विवाहित होना चाहिए जब तक कि उनके पतियों की मृत्यु न हो जाए। उसके बाद, वे किसी भी ऐसे विश्वास करने वाले पुरुष से विवाह कर सकती हैं जिससे वे विवाह करना चाहती हैं।

40 हालाँकि, {मैं सोचता हूँ कि} ऐसी कोई भी स्त्री जिसके पति की मृत्यु हो गई है, यदि वह दोबारा विवाह न करे तो अधिक सुखी रहेगी। जबकि यह मेरी सलाह है, इसलिए मैं सोचता है कि परमेश्वर का आत्मा मेरे द्वारा बोलता है।

1 Corinthians 8:1

1 अब मैं उस मांस के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ जो किसी व्यक्ति ने दूसरे देवता को चढ़ाया है। हम सभी {जो विश्वासी हैं} वह बात जानते हैं {जो दूसरे देवताओं के बारे में सच है। हालाँकि,} {अक्सर जो सच होता है} उसे जानने पर लोगों को घमण्ड होता है। यह दूसरों से प्रेम करना ही है जो वास्तव में अन्य विश्वासियों की सहायता करता है।

2 सभी लोग जो यह मानते हैं कि वे कुछ समझते हैं, वे अभी तक उसे इस रीति से नहीं समझते जैसा उन्हें उसे समझना चाहिए।

3 हालाँकि, परमेश्वर उन सभी लोगों को समझता है और उनकी चिन्ता करता है जो उससे प्रेम करते हैं।

4 अब मैं उस बारे में {बात करने की ओर वापस जाऊँगा} कि वह मांस जो किसी ने दूसरे देवता को चढ़ाया है खाना चाहिए या नहीं। हम {जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं} यह समझते हैं कि अन्य देवताओं का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। बल्कि, {हम समझते हैं} कि केवल परमेश्वर ही एकमात्र ईश्वर है।

5 यह सच है कि जो स्वर्ग में या पृथ्वी पर ऐसी बहुत सी वस्तुएँ हैं जिन्हें लोग "देवता" कहते हैं। इस रीति से, बहुत से "ईश्वर" और "प्रभु" अस्तित्व में हैं।

6 हालाँकि, हम {जो विश्वास करते हैं} उस एक परमेश्वर को मानते हैं, जो पिता है। उसी ने सब कुछ रचा, और हम उसका सम्मान करने के लिए जीवित हैं। हम एक ही प्रभु को भी मानते हैं, जो यीशु मसीह है। उसने पिता के साथ सब कुछ रचा, और जो वह {हमारे लिए} करता है उसी के द्वारा हम जीवित हैं।

7 हालाँकि, {मैंने जो कहा है} कुछ लोग उसे पूर्णरूप से नहीं समझते हैं। वे अतीत में अन्य देवताओं की उपासना करते थे, और वे पूर्णरूप से नहीं समझते कि क्या सही है और क्या गलत। जब वे उस मांस को खाते हैं जो किसी ने दूसरे देवता को चढ़ाया है, तो वे दोषी महसूस करते हैं।

8 अब भोजन हमें परमेश्वर से नहीं जोड़ता। जो लोग {कुछ खाद्य पदार्थों को} नहीं खाते हैं, वे {परमेश्वर की किसी भी वस्तु को पाने से} वंचित नहीं रहते हैं। साथ ही, जो लोग {कुछ खाद्य पदार्थों को} खाते हैं, उन्हें {परमेश्वर से} कुछ अतिरिक्त नहीं मिलता है।

9 हालाँकि, यदि तुम जानते हो कि {भोजन महत्वपूर्ण नहीं है} तो तुम्हें इस बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है कि तुम कैसा जीवन व्यतीत करते हो। तुम जैसा जीवन व्यतीत करते हो, वह {यीशु का अनुसरण करने के लिए} संघर्ष करने में

किसी ऐसे व्यक्ति के इस बात को अपूर्ण रूप से समझने का कारण नहीं बनना चाहिए कि क्या सही है और क्या गलत है।

10 {तुम्हें सावधान रहने की आवश्यकता इसलिए भी है} क्योंकि तुम्हारे संगी विश्वासी किसी ऐसे विश्वासी पर ध्यान दे सकते हैं जो जानता है कि {दूसरे देवताओं के बारे में क्या सच है} और दूसरे देवता के मन्दिर में {मांस} खाने के लिए बैठता है। ऐसे संगी विश्वासी, जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं समझते, उन्हें यह आश्वासन हो जाएगा कि वे भी उस मांस को खा सकते हैं जो किसी ने दूसरे देवता को चढ़ाया है।

11 इसके परिणामस्वरूप, तुम जो जानते हो {जो अन्य देवताओं के बारे में सच है} उसके आधार पर अभिनय करके, तुम उन दूसरों लोगों को हानि पहुँचाते हो जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं समझते हैं। ये तुम्हारे संगी विश्वासी हैं, और मसीह उनके लिए भी मरा।

12 जब तुम इन तरीकों से कार्य करते हो, तो तुम अपने संगी विश्वासियों की जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं समझते हैं, उस काम को करने की ओर अगुवाई करते हुए उनके विरुद्ध पाप करते हो, जिसे वे गलत मानते हैं। {जब तुम ऐसा करते हो,} तो तुम मसीह के विरुद्ध भी पाप करते हो।

13 इसके फलस्वरूप, उन मामलों में जहाँ जो मैं खाता हूँ यदि वह किसी संगी विश्वासी को पाप की ओर ले जाए, तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊँगा{, चाहे किसी ने इसे किसी दूसरे देवता को चढ़ाया हो या नहीं}। इस रीति से, मैं अपने किसी भी संगी विश्वासी को पाप की ओर नहीं ले जाता।

1 Corinthians 9:1

1 मैं {केवल कुछ खाद्य पदार्थों को खाने के लिए} बाध्य नहीं हूँ। हमारे प्रभु यीशु ने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है, और मैंने उसे {अपनी आँखों से} देखा है। परमेश्वर ने हमें प्रभु के साथ एकजुट कर दिया है, और इसी कारण से मैंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम किया है।

2 शायद दूसरे लोग यह न सोचें कि मसीह ने मुझे उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है, परन्तु तुम यह जानते हो। {तुम यह इसलिए जानते हो} क्योंकि जब परमेश्वर ने तुम्हें प्रभु के साथ एकजुट कर दिया तो तुम ने यह साबित कर दिया कि मसीह ने ही मुझे भेजा है।

3 अब मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध अपना बचाव कर पाऊँगा जो यह प्रश्न करना चाहता है कि {उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए} {मसीह ने मुझे भेजा है या नहीं}।

4 बरनबास और मैं निश्चय ही तुम से कह सकते हैं कि तुम हमें खाने और पीने की वस्तुएँ भेजो।

5 निश्चय ही हम ऐसी पत्नी के साथ भी यात्रा कर सकते हैं जो मसीह पर विश्वास करती हो। पतरस और प्रभु के भाइयों सहित, जिन लोगों को मसीह ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है, वे ऐसा ही करते हैं।

6 यह सच नहीं है कि केवल बरनबास और मैं ही हैं {जो मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं} जिन्हें {स्वयं को सहारा देने के लिए} काम करना चाहिए।

7 सेना में सेवा करने के लिए कोई भी सैनिक कभी भी अपने धन से भुगतान नहीं करता। ऐसा कोई भी किसान नहीं जो दाखलताओं को लगाकर, फिर उनसे उत्पन्न होने वाली वस्तु को न खाए। ऐसा कोई भी चरवाहा नहीं जो भेड़ों की देखभाल करके, फिर उनसे उत्पन्न होने वाले दूध को न पीए।।

8 मैं जो तर्क दे रहा हूँ वह केवल मानवीय सोच पर निर्भर नहीं है। बल्कि, तुम पढ़ सकते हो कि मैं {मूसा की} व्यवस्था से तर्क कर रहा हूँ।

9 मूसा ने अपनी व्यवस्था में जो लिखा है, वह यह है: “जब एक बैल भूसी से अन्न को अलग करने में तुम्हारी सहायता कर रहा हो, तो तुम्हें उसे अन्न खाने से रोकना नहीं चाहिए।” {हालाँकि,} परमेश्वर को मुख्य रूप से बैलों में कोई रूचि नहीं है।

10 बल्कि, {इस व्यवस्था में} परमेश्वर अधिकतर हमारे बारे में बोलता है। परमेश्वर ने मूसा से हमारे लिए यह आदेश इसलिए लिखवाया था क्योंकि जो व्यक्ति खेत जोतता है उसे कुछ फसल प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति जो गेहूँ के डंठल से अनाज को अलग करता है उसे भी कुछ फसल प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए।

11 हम ने तुम्हें शुभ सन्देश ऐसे सुनाया, कि मानो हम आत्मिक बीज बो रहे हों। इस कारण से, हमारे लिए तुम से वित्तीय सहायता प्राप्त करना सामान्य होगा कि मानो हमें उस बीज से कुछ फसल प्राप्त हो रही थी जो हम ने बोया था।

1 Corinthians 9:1

12 दूसरे लोगों को तुम से वित्तीय सहायता मिली है। बल्कि
बरनबास और मैं तो इसे तुम से प्राप्त करने के लिए और भी
अधिक पात्र हैं। हालाँकि, हम ने तुम से कोई सहायता नहीं
माँगी। बजाए इसके, हम ने उन वस्तुओं के बिना जाने का
चुनाव इसलिए किया ताकि हम मसीह के बारे में शुभ सन्देश
को फैलने से न रोकें।

13 निश्चय ही तुम जानते हो कि जो लोग मन्दिर में अपना कर्तव्य
निभाते हैं, वे उस भोजन में से भी कुछ खाते हैं जिसे लोग
मन्दिर में चढ़ाते हैं। अधिक विशेष रूप से, जो याजक वेदी पर
बलि चढ़ाते हैं, वे उसका एक भाग प्राप्त करते हैं जो कुछ लोग
वेदी पर चढ़ाने के लिए लाते हैं।

14 इसी रीति से, प्रभु ने निर्देश दिया है कि जो कोई भी शुभ
सन्देश का प्रचार करता है, उसे शुभ सन्देश {का प्रचार करने}
से अपनी जीविका कमानी चाहिए।

15 हालाँकि, मैंने तुम से इसमें से कोई भी सहायता नहीं माँगी।
इसके अलावा, मैं अब तुम को अपने लिए सहायता माँगने के
लिए नहीं लिख रहा हूँ। मैं मर जाना पसंद करूँगा, बजाए
इसके कि कोई उस वस्तु को छीन ले, जिस पर मैं घमण्ड कर
सकता हूँ।

16 अब मैं शुभ सन्देश का प्रचार करने में घमण्ड इसलिए नहीं
कर सकता, क्योंकि परमेश्वर ही चाहता है कि मैं उसका प्रचार
करूँ। वास्तव में, यदि मैं शुभ सन्देश का प्रचार करना बंद कर
देता, तो परमेश्वर मुझे अनुशासित करता।

17 यदि मैं शुभ सन्देश का प्रचार करता तो परमेश्वर मुझे
इसलिए पुरस्कार देता क्योंकि मैंने स्वयं ऐसा करने का चुनाव
किया था। हालाँकि, ऐसा करने का चुनाव मैंने नहीं किया,
क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं मुझे बताया था कि मुझे क्या करना
है।

18 हालाँकि, परमेश्वर फिर भी मुझे पुरस्कार देता है। {वह ऐसा
तब करता है} जब मैं लोगों को इस बात के बिना शुभ सन्देश
का प्रचार करता हूँ कि उनको मुझे भुगतान करने की
आवश्यकता है। क्योंकि मैं शुभ सन्देश का प्रचार करता हूँ
इसलिए मैं लोगों को शुभ सन्देश के बारे में इस रीति से बताता
हूँ ताकि मैं जो माँग कर सकता हूँ उसका दुरूपयोग न करूँ।

19 {चूँकि मैं मुफ्त में शुभ सन्देश का प्रचार करता हूँ, इसलिए}
मुझे किसी भी मनुष्य की सेवा करने की आवश्यकता नहीं है।
हालाँकि, मैं स्वयं सभी मनुष्यों की सेवा करने का चुनाव
इसलिए करता हूँ ताकि मैं उनमें से अधिक से अधिक लोगों
की सहायता कर सकूँ {कि वे मसीह पर विश्वास करें}।

20 जब मैं यहूदी लोगों के साथ होता हूँ, तो मैं एक यहूदी व्यक्ति
के समान व्यवहार करता हूँ। इस रीति से, मैं यहूदी लोगों की
सहायता कर सकता हूँ {कि वे मसीह पर विश्वास करें}। जब
मैं ऐसे लोगों के साथ होता हूँ जो सोचते हैं कि उन्हें मूसा की
व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता है, तो मैं किसी ऐसे
व्यक्ति के समान व्यवहार करता हूँ जो सोचता है कि उसे भी
मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता है।
जबकि मैं स्वयं जानता हूँ कि मुझे मूसा की व्यवस्था का पालन
करने की आवश्यकता नहीं है, {मैं इस रीति से व्यवहार
इसलिए करता हूँ} ताकि मैं उन लोगों की सहायता कर सकूँ
जो सोचते हैं कि उन्हें मूसा की व्यवस्था का पालन करने की
आवश्यकता है {कि वे मसीह पर विश्वास करें}।

21 जब मैं उन लोगों के साथ होता हूँ जो मूसा की व्यवस्था का
पालन नहीं करते, तो मैं किसी ऐसे व्यक्ति के समान व्यवहार
करता हूँ जो मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करता है। {मैं
इस रीति से व्यवहार इसलिए करता हूँ} ताकि मैं उन लोगों की
सहायता कर सकूँ जो मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करते
{कि वे मसीह पर विश्वास करें}। निःसन्देह, मैं परमेश्वर की
व्यवस्था का पालन करता हूँ, क्योंकि मैं वही करता हूँ जिसकी
मसीह ने आज्ञा दी है।

22 जब मैं ऐसे लोगों के साथ होता हूँ जो सही और गलत को
पूर्णरूप से नहीं समझते, तो मैं किसी ऐसे व्यक्ति के समान
व्यवहार करता हूँ जो सही और गलत को पूर्णरूप से नहीं
समझता। {मैं इस रीति से व्यवहार इसलिए करता हूँ} ताकि
मैं उन लोगों की सहायता कर सकूँ जो सही और गलत को
पूर्णरूप से नहीं समझते {कि वे मसीह पर विश्वास करें}।
{जैसा कि तुम देख सकते हो, कि} जब मैं अलग-अलग लोगों
के साथ होता हूँ, तो मैं वैसा ही व्यवहार करता हूँ जैसा वे करते
हैं ताकि परमेश्वर उन सभी बातों के माध्यम से कार्य करे जो मैं
उनमें से कुछ को बचाने के लिए करता हूँ।

23 जैसा कि तुम देख सकते हो कि मैं इन सब तरीकों से काम
इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि लोग शुभ सन्देश पर
विश्वास करें। {इसके अलावा, मैं इन कामों को इसलिए भी
करता हूँ} ताकि मैं भी शुभ सन्देश में परमेश्वर की प्रतिज्ञा को
प्राप्त करूँ।

24 निश्चित रूप से तुम जानते हो कि सभी धावक दौड़ में भाग लेते हैं, परन्तु अंत में केवल एक धावक दौड़ को जीतता है और जीतने का पुरस्कार पाता है। जब तुम परमेश्वर की सेवा करते हो तो यह बहुत कुछ इस प्रकार की दौड़ के समान होता है। परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा तुम से की है उसे प्राप्त करने के लिए तुम्हें वैसा ही कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है, जैसा धावक दौड़ को जीतने के लिए कठिन परिश्रम करता है।

25 सभी धावक जो कुछ भी करते हैं उसे सावधानीपूर्वक नियंत्रित इसलिए करते हैं {ताकि वे जीत सकें}। वे पत्तों से बने एक ऐसे मुकुट के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं जो नाश हो जाएगा। हालाँकि, हम {स्वयं को नियंत्रित इसलिए करते हैं ताकि हम वह प्राप्त कर सकें जो परमेश्वर ने हमें देने की प्रतिज्ञा की है,} जो सदा तक बना रहेगा।

26 इस कारण से, मैं उस धावक के समान हूँ जो अंतिम रेखा की ओर सीधा दौड़ता है। मैं उस मुक्केबाज के समान हूँ जो बिना चूके किसी प्रतिद्वंद्वी पर प्रहार करता है।

27 मैं अपने शरीर को पूर्णरूप से नियंत्रित करता हूँ और इससे अपनी सेवा करवाता हूँ। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं दूसरे लोगों को शुभ सन्देश सुनाना नहीं चाहता, परन्तु फिर देखता हूँ कि परमेश्वर मुझे पसंद नहीं करता।

1 Corinthians 10:1

1 हे संगी विश्वासियों, अब मैं तुम्हें स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि हमारे सब यहूदी पूर्वजों ने उस समय परमेश्वर का अनुसरण किया था जब वह उन्हें एक बादल में होकर दिखाई देता था। जब परमेश्वर ने जल के बीच से उनके लिए सूखा मार्ग बनाया, तब वे सब लाल समुद्र से होकर चले।

2 {यह ऐसा था कि मानो} किसी ने उन सभी को इसलिए बपतिस्मा दिया कि वे मूसा के हो जाएँ। {यह उस समय घटित हुआ} जब उन्होंने बादल का अनुसरण किया और लाल समुद्र से होकर चले।

3 उन सब ने मिलकर वह विशेष भोजन खाया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था।

4 उन सब ने मिलकर वह विशेष जल पिया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। यह उस समय हुआ जब उन्होंने उस विशेष चट्टान से निकला पानी पिया जिसे परमेश्वर ने प्रदान किया था और जो उनके पीछे-पीछे चलता था। वह पानी कुछ वैसा ही था जो मसीह ने दिया था।

5 हालाँकि, हमारे अधिकांश यहूदी पूर्वजों ने परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया। {तुम कह सकते हो कि यह सच है} क्योंकि वे निर्जन स्थानों से यात्रा करते हुए मर गए।

6 उनके साथ जो घटित हुआ, वह बताता है कि हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए। उनके साथ जो घटित हुआ, उसके द्वारा परमेश्वर हमें चेतावनी देता है कि हम बुराई करने से बचें, अर्थात वैसे बुरे काम जो उन्होंने किए थे।

7 तुम्हें मूर्तियों की उपासना नहीं करनी चाहिए, जैसे कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों ने की थी। {तुम कह सकते हो कि उन्होंने मूर्तियों की उपासना की थी,} क्योंकि मूसा ने लिखा है, "इस्राएलियों ने खाना-पीना आरम्भ कर दिया और फिर अनैतिक यौनाचार के तरीकों से अन्य देवताओं की उपासना की।"

8 हमें अनुचित यौन सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए, जैसा कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों ने किया था। क्योंकि उन्होंने ऐसा किया, इसलिए उनमें से 23, 000 एक दिन में मर गए।

9 हमें प्रभु को चुनौती नहीं देनी चाहिए, जैसे कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों ने दी थी। क्योंकि उन्होंने ऐसा किया था, इसलिए साँपों ने उन्हें मार डाला।

10 तुम्हें शिकायत नहीं करनी चाहिए, जैसे कि हमारे कुछ यहूदी पूर्वजों ने की थी। क्योंकि उन्होंने ऐसा किया, इसलिए एक भयानक आत्मिक प्राणी ने (जिसे परमेश्वर ने भेजा था) उन्हें मार डाला।

11 हमारे पूर्वजों ने जिन बातों का अनुभव किया, वे बताती हैं कि {हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए}। वास्तव में, किसी ने उनके साथ जो हुआ उसे लिख लिया ताकि हम उनसे सीख सकें, क्योंकि हम वही लोग हैं जो अंत के दिनों का अनुभव कर रहे हैं।

12 जैसा कि उन कहानियों में बताया गया है, कि जो लोग सोचते हैं कि वे {मसीह पर} दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे {मसीह का अनुसरण करने में} असफल न हों।

13 अन्य लोगों ने उन बातों का अनुभव किया है जो तुम्हें लुभाती
हैं। इसके अलावा, परमेश्वर विश्वासयोग्यता से कार्य करेगा।
यदि तुम उसका विरोध नहीं कर सकते हो तो वह तुम्हें ऐसी
किसी भी बात का अनुभव नहीं करने देगा जो तुम्हें लुभाती है।
बजाए इसके, जब कोई बात तुम्हें लुभाती है, तो वह तुम्हें वह
देगा जिसकी तुम्हें विश्वासयोग्यता से उसका विरोध करने के
लिए आवश्यकता है।

14 हे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, इसी {कारण से
मैंने जानबूझकर कहा है कि} दूसरे देवताओं की उपासना
करने से बचो।

15 मैं इस रीति से बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता
है कि तुम समझदार लोग हो। तुम स्वयं निर्धारित करो कि मैं
जो कहने वाला हूँ वह सही है या गलत।

16 जब हम प्रभु भोज में वह दाखमधु पीते हैं जिस पर हम
आशीष माँगते हैं, तो हम स्वयं को एक साथ मसीह के लहू से
जोड़ते हैं। जब हम उस रोटी को खाते हैं, तो हम स्वयं को एक
साथ मसीह की देह से जोड़ते हैं।

17 हम {प्रभु भोज में} एक ही रोटी का उपयोग करते हैं, और
हम सब मिलकर उस एक रोटी के टुकड़े खाते हैं। क्योंकि हम
ऐसा करते हैं, इसलिए हम आपस में ऐसे जुड़ जाते हैं जैसे कि
हम सब एक शरीर हों।

18 इस्राइल के लोगों को एक उदाहरण के रूप में लो। जो लोग
कुछ भेंट चढ़ाते थे, वे अपनी भेंट में से कुछ खा लेते थे। इसका
अर्थ यह है कि उन्होंने स्वयं को उस वेदी से जोड़ लिया{, जहाँ
याजक उस बाकी की वस्तु को परमेश्वर के सामने रखेगा जिसे
उन्होंने चढ़ाया है}।

19 इसलिए, मैं तर्क दे रहा हूँ कि वह मांस जो किसी ने दूसरे
देवता को चढ़ाया है और वह अन्य देवता भी शक्तिशाली या
महत्वपूर्ण नहीं हैं।

20 हालाँकि, {तुम्हें पता होना चाहिए} कि जो लोग परमेश्वर की
आराधना नहीं करते, वे ही बलिदान चढ़ाते हैं, और वे उन्हें
परमेश्वर को नहीं, बल्कि दुष्ट आत्मिक प्राणियों को चढ़ा रहे हैं।
मैं चाहता हूँ कि तुम स्वयं को दुष्ट आत्मिक प्राणियों से जोड़ने
से बचो।

21 तुम प्रभु का दाखमधु और साथ ही दुष्ट आत्मिक प्राणियों
का दाखमधु नहीं पी सकते। तुम प्रभु का भोजन और साथ ही
दुष्ट आत्मिक प्राणियों का भोजन नहीं खा सकते।

22 जो इन दोनों कामों को करते हैं, उन्हें यह अपेक्षा करनी
चाहिए कि प्रभु उनके विरुद्ध ईर्ष्या में होकर कार्य करेगा।
इसके अलावा, हम निश्चित रूप से उससे कम शक्तिशाली हैं।

23 {तुम में से कुछ कहते हैं,} "मैं कुछ भी कर सकता हूँ और
दोषी नहीं ठहरूँगा।" हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} कुछ
बातें {किसी के लिए भी} सहायक नहीं होती हैं। {फिर से, तुम
में से कुछ कहते हैं,} "मैं कुछ भी कर सकता हूँ और दोषी नहीं
ठहरूँगा।" हालाँकि, {मैं यह कहता हूँ कि} कुछ बातें तुम्हें
बढ़ने में सहायता नहीं करती हैं।

24 तुम्हारे लिए जो उत्तम है उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम न
करो। बल्कि, {तुम्हें उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम करना
चाहिए} जो दूसरे लोगों के लिए उत्तम है।

25 तुम ऐसा कोई भी भोजन खा सकते हो जिसे तुम सार्वजनिक
बाजार से खरीदते हो। तुम्हें यह पता लगाने की आवश्यकता
नहीं है कि {यह कहाँ से आया है} ताकि तुम जान सको कि
{इसे खाना} सही है या गलत।

26 {तुम ऐसा इसलिए कर सकते हो} क्योंकि {दाऊद ने लिखा
है}, "पृथ्वी और उससे जुड़ी हर वस्तु प्रभु की है।"

27 किसी समय पर, जो लोग विश्वास नहीं करते वे तुम से
{उनके साथ भोजन करने के लिए} विनती कर सकते हैं, और
तुम भी {ऐसा करने} का निर्णय ले सकते हो। जब ऐसा घटित
होता है, तो तुम वह सब भोजन खा सकते हो जो वे तुम्हें
परोसते हैं। तुम्हें यह पता लगाने की आवश्यकता नहीं है कि
{यह कहाँ से आया है} ताकि तुम जान सको कि {इसे खाना}
सही है या गलत।

28 (हालाँकि, कोई व्यक्ति तुम्हें बता सकता है कि एक व्यक्ति
ने किसी देवता को वह भोजन चढ़ाया है। इस परिस्थिति में,
तुम्हें वह भोजन नहीं खाना चाहिए। {तुम्हें इस रीति से व्यवहार
करना चाहिए कि} उस व्यक्ति को लाभ पहुँचे जिसने तुम्हें
{भोजन के बारे में} बताया था और यह जानने के कारण कि
सही और गलत क्या है।

29 "सही और गलत क्या है, यह जानने" से मेरा अर्थ है कि दूसरा व्यक्ति क्या जानता है, न कि तुम क्या जानते हो।) सामान्य रूप से, दूसरे व्यक्ति को जो लगता है कि सही या गलत क्या है, वह बात मुझे उस काम को करने से न रोके जिसे मैं करने में सक्षम हूँ।

30 किसी भी भोजन को खाते समय जब तक मैं परमेश्वर का आभारी हूँ, तब तक किसी को भी मेरे बारे में ऐसी किसी भी बात के कारण बुरा नहीं बोलना चाहिए, जिसके लिए मैंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया हो।

31 संक्षेप में, जब भी तुम कुछ भी खाओ या पियो, और वास्तव में जब भी तुम कुछ भी करो, तो तुम्हें हमेशा ऐसा व्यवहार करना चाहिए ताकि तुम और अन्य लोग परमेश्वर का सम्मान करें।

32 ऐसे तरीकों से व्यवहार न करना जो यहूदी लोगों, गैर-यहूदी लोगों, या संगी विश्वासियों को मसीह पर भरोसा करने से हतोत्साहित करे।

33 मैं जैसे जीवन व्यतीत करता हूँ, उससे मैं {इसे कैसा करना है} का वर्णन करता हूँ। मैं हमेशा ऐसे तरीकों से व्यवहार करता हूँ जिनको मेरे आसपास के सभी लोग स्वीकार करते हैं। जो मेरे लिए उत्तम है मैं उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम नहीं करता। बल्कि, {मैं उसे पाने के लिए कठिन परिश्रम करता हूँ जो} दूसरे लोगों के लिए उत्तम है। {मैं यह इसलिए करता हूँ} ताकि परमेश्वर उनका उद्धार करे।

1 Corinthians 11:1

1 जो मैं करता हूँ वही करो, ठीक वैसे ही जैसे मैं वह करता हूँ जो मसीह ने किया।

2 मैं तुम्हारी सराहना इसलिए करता हूँ क्योंकि तुम हमेशा उस पर विचार करते हो जो मैं सिखाता एवं करता हूँ और क्योंकि तुम ध्यानपूर्वक विश्वास करते हो और वही करते हो जिस पर मैंने तुम्हें विश्वास करना और व्यवहार करना सिखाया था।

3 मैं तुम से कहता हूँ कि हर एक पुरुष मसीह की ओर से आता है। एक पत्नी अपने पति की ओर से आती है। अंत में, मसीह परमेश्वर की ओर से आता है।

4 शायद पुरुष लोग प्रार्थना करते समय या परमेश्वर की कही हुई बातों का प्रचार करते समय अपने सिर ढकते हों। जो ऐसा करते हैं वे उस व्यक्ति को लज्जित करते हैं जिसकी ओर से वे आते हैं: {अर्थात मसीह को}।

5 अब शायद स्त्रियाँ प्रार्थना करते समय या परमेश्वर की कही हुई बातों का प्रचार करते समय अपने सिर नंगे रखती हों। जो ऐसा करती हैं वे उन लोगों को लज्जित करती हैं जिनकी ओर से वे आती हैं: {अर्थात उनके पति को}। {तुम कह सकते हो कि यह सच है,} क्योंकि जो स्त्री अपना सिर नंगा रखती है वह उस स्त्री के समान होती है जिसके बाल किसी ने मुण्ड दिए हैं।

6 वास्तव में, किसी व्यक्ति को ऐसी किसी भी स्त्री के बाल काट देने चाहिए जो अपना सिर नंगा रखती है। चूँकि लोग छोटे बाल वाली स्त्री को लज्जित करते हैं, इसलिए स्त्रियों को अपना सिर नंगा नहीं रखना चाहिए।

7 इसके अलावा, एक ओर तो पुरुषों को अपने सिर इसलिए नहीं ढकने चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसका सम्मान करते हैं। दूसरी ओर, पत्नियों को अपने सिर इसलिए नहीं ढकने चाहिए, क्योंकि वे अपने पतियों का सम्मान करती हैं।

8 {तुम कह सकते हो कि यह सच है} क्योंकि परमेश्वर ने पुरुष आदम को स्त्री हव्वा से नहीं बनाया। बजाए इसके, उसने हव्वा स्त्री को पुरुष आदम से बनाया।

9 एक और तरीका {जिससे तुम बता सकते हो कि यह सच है} क्योंकि परमेश्वर ने स्त्री हव्वा के निमित्त पुरुष आदम को नहीं बनाया। बजाए इसके, उसने पुरुष आदम के निमित्त स्त्री हव्वा को बनाया।

10 क्योंकि {पत्नियाँ अपने पति का सम्मान करती हैं इसलिए}, स्त्रियों को उसे नियंत्रित करना चाहिए जो वे अपने सिरों पर {पहनती हैं}। शक्तिशाली आत्मिक प्राणियों के कारण {उन्हें ऐसा करना भी चाहिए}।

11 इन सब के बावजूद, जब परमेश्वर लोगों को मसीह के साथ एकजुट करता है, तो स्त्रियों का अस्तित्व पुरुषों के बिना नहीं है, और पुरुषों का अस्तित्व स्त्रियों के बिना नहीं है।

1 Corinthians 11:1

12 वास्तव में, जबकि स्त्री {हव्वा} पुरुष {आदम} से निकली थी, तो पुरुषों का अस्तित्व केवल इसलिए है क्योंकि स्त्रियाँ उन्हें जन्म देती हैं। हालाँकि, {पुरुषों और स्त्रियों सहित,} जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह परमेश्वर की ओर से आता है।

13 तुम स्वयं ही निर्णय करो कि जो स्त्रियाँ अपने सिरों को ढके बिना परमेश्वर से प्रार्थना करती हैं, वे उचित रीति से कार्य करती हैं या नहीं।

14 तुम वस्तुओं को देखने के तरीके से मालूम कर सकते हो कि पुरुषों के लिए लम्बे बाल रखना अपमानजनक है।

15 हालाँकि, {तुम वस्तुओं को देखने के तरीके से भी मालूम कर सकते हो} कि स्त्रियों के लिए लम्बे बाल रखना सम्मान की बात है। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर ने स्त्रियों को उनके लम्बे बाल दिए हैं, जो {उनके सिरों को} ढकने का काम करते हैं।

16 अब यदि कोई व्यक्ति मेरे द्वारा कही गई बातों के बारे में बहस करने पर विचार करता है, तो न तो हम और न ही परमेश्वर की कलीसियाएँ स्त्रियों को उनके सिरों को (जब वे प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती हैं) खुला रखने की अनुमति देती हैं।

17 अब मैं तुम्हें एक अन्य विषय के बारे में निर्देश देने जा रहा हूँ, और मैं इस क्षेत्र में तुम्हारी सराहना नहीं कर सकता। {मैं तुम्हारी सराहना इसलिए नहीं कर सकता,} क्योंकि जब तुम संगी विश्वासियों के रूप में इकट्ठे होते हो तो तुम उनकी सहायता करने के बजाए संगी विश्वासियों को हानि पहुँचाते हो।

18 पहली बात जिसके बारे में मैं बात करूँगा वह यह है कि: कुछ लोगों ने मुझ से कहा है कि जब तुम परमेश्वर की आराधना करने के लिए संगी विश्वासियों के रूप में इकट्ठा होते हो तो तुम प्रतिद्वंद्वी समूहों में विभाजित हो जाते हो। मैं विश्वास करता हूँ कि यह आंशिक रूप से सच है।

19 {मैं इस पर इसलिए विश्वास करता हूँ} क्योंकि तुम्हारे समूह में असहमतियाँ होना आवश्यक है। इस रीति से, {सभी लोगों पर} यह स्पष्ट हो सकता है तुम्हारे समूह में से परमेश्वर {अपने लिए} किसे स्वीकार्य मानता है।

20 इन विभाजनों के कारण, तुम वास्तव में उस समय प्रभु भोज नहीं खा रहे हो जब तुम संगी विश्वासियों के रूप में {इसे खाने के लिए} इकट्ठे होते हो।

21 तुम्हारे भोजों के दौरान, कुछ लोग {दूसरों के कुछ पाने से पहले ही} अपना स्वयं का भोजन खा जाते हैं। इस रीति से, कुछ लोगों को खाने के लिए पर्याप्त नहीं मिलता, जबकि अन्य लोग नशे में धुत हो रहे हैं।

22 तुम अपने घरों में भी भोजन खा सकते हो और दाखरस पी सकते हो, इसके बावजूद तुम इन तरीकों से व्यवहार करते हो। बजाए इसके, तुम परमेश्वर की कलीसिया के बारे में तिरस्कारपूर्वक विचार करते हो। विशेष रूप से, तुम उन लोगों को लज्जित करते हो जिनके पास तुम से कम है। तुम्हें पहले से ही पता होना चाहिए कि मैं तुम से क्या कहूँगा। मैं इन कामों को करने के लिए तुम्हारी सराहना नहीं करने जा रहा हूँ। मैं निश्चित रूप से ऐसा नहीं करूँगा!

23 जब यहूदा ने प्रभु यीशु को {उन अधिकारियों के हाथों में सौंपा, जिन्होंने उसे मार डाला,} उस रात के बारे में जो कुछ मैंने प्रभु से जाना, वह मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है। उस रात, यीशु ने एक रोटी ली।

24 उसने {उस रोटी के लिए} परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और फिर उसके टुकड़े-टुकड़े किए {ताकि चेले उसे खा सकें}। फिर उसने कहा, "यह {रोटी} मेरी देह है, जिसे मैं तुम्हारे निमित्त अर्पित कर रहा हूँ। मैंने जो किया है उसे दोहराना, ताकि तुम्हें स्मरण रहे कि मैं स्वयं को {तुम्हारे लिए} {कैसे अर्पित कर रहा हूँ}।"

25 जिस प्रकार से {उसने रोटी ली थी}, उसी प्रकार से उनसे उनके भोजन खा लेने के बाद {दाखरस का} कटोरा भी लिया। उसने कहा, "यह {दाखरस का} कटोरा मेरे लहू के साथ नयी वाचा है {जिसका मैं प्रारम्भ कर रहा हूँ} । जब भी तुम इस दाखरस के कटोरे में से पीते हो, तो जो मैंने किया है उसे दोहराना, ताकि तुम्हें स्मरण रहे कि मैं स्वयं को {तुम्हारे लिए} {कैसे अर्पित कर रहा हूँ}।"

26 इसका अर्थ यह है कि जब तक प्रभु वापस न आए, उस समय तक जब कभी भी इस रोटी को खाने और इस कटोरे से {दाखरस} पीने के द्वारा {तुम प्रभु भोज में भाग लेते हो}, तो तुम घोषणा करते हो कि प्रभु की मृत्यु हो गई है।

27 इसलिए फिर, कुछ लोग, प्रभु भोज में भाग लेते हुए, शायद इस रीति से रोटी खाएँ या कटोरे से {दाखरस} पीएँ जिससे {मसीह} का अपमान हो। परमेश्वर उन्हें इसके लिए उत्तरदायी ठहराएगा जैसे उन्होंने प्रभु की देह और उसके लहू {के विरुद्ध कार्य किया है}।

28 इससे बचने के लिए, विश्वासियों को सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि वे कैसा व्यवहार कर रहे हैं। उसके बाद, वे रोटी खा सकते हैं और कटोरे से {दाखरस} पी सकते हैं।

29 {तुम्हें सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि तुम कैसा व्यवहार कर रहे हो,} क्योंकि कुछ लोग {प्रभु भोज के दौरान} खाते-पीते तो हैं परन्तु यह नहीं पहचानते कि {परमेश्वर ने संगी विश्वासियों को प्रभु के साथ इतनी निकटता से एकजुट किया है कि मानो वे} प्रभु की देह हों। {प्रभु भोज के दौरान} वे लोग जैसे खाते और पीते हैं, इसके परिणामस्वरूप परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा।

30 क्योंकि {तुम्हारे समूह के लोगों ने ऐसे अनुचित तरीके से काम किया है कि}, उनमें से बहुत से तो बीमार हो गए और उनमें से कुछ की मृत्यु हो गई है।

31 इसलिए, हम विश्वासियों को वास्तव में सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि {प्रभु भोज में भाग लेने से पहले} हम कैसा व्यवहार कर रहे हैं। तब, परमेश्वर हमें दण्ड नहीं देगा।

32 हालाँकि, जब प्रभु हमें दण्ड देता है, तो वह हमें प्रशिक्षित करने के लिए ऐसा करता है। इस रीति से, जब परमेश्वर उन सब को दोषी ठहराता है जो मसीह में विश्वास नहीं करते, तब परमेश्वर उसमें हमें शामिल नहीं करता।

33 अंत में, हे मेरे संगी विश्वासियों, जब तुम {प्रभु भोज} खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो तुम्हें तब तक खाना आरम्भ नहीं करना चाहिए जब तक कि सभी को खाना-पीना न मिल जाए।

34 कोई भी व्यक्ति जो {इतना} भूखा हो {कि सब के खाना-पीना प्राप्त करने से पहले ही खाना आरम्भ कर दे} उसे अपने घर में ही खा लेना चाहिए। इस रीति से, जब तुम संगी विश्वासियों के रूप में एक साथ इकट्ठे होते हो, तो परमेश्वर तुम्हें दण्ड नहीं देगा। मैंने वह सब कुछ नहीं कहा जो मुझे कहने की आवश्यकता है। इसलिए, जब कभी मैं तुम से मिलने आऊँगा, तो मैं तुम्हें उन बातों के बारे में निर्देश दूँगा।

1 Corinthians 12:1

1 अब मैं इस बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ कि कैसे परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों को विशेष रूप से सशक्त करता है। हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं तुम्हें इन बातों के बारे में सूचित करना चाहता हूँ।

2 तुम्हें स्मरण है कि जब तुम विश्वासी नहीं थे {तो तुम उस समय क्या किया करते थे}। तुम ने अन्य देवताओं की उपासना की। ये अन्य देवता बोल भी नहीं सकते, परन्तु इन अन्य देवताओं की उपासना करने के लिए जो भी {गलत काम लोगों ने तुम्हें करने के लिए कहे तुम ने उन्हें} किया।

3 इसलिए मैं तुम्हें सूचित कर रहा हूँ कि जो कोई यीशु को श्राप देता है, वह परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से नहीं बोलता। दूसरी ओर, एक व्यक्ति जो कहता है कि यीशु ही प्रभु है, अवश्य ही पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ बात कर रहा होगा।

4 आत्मा बहुत से अलग-अलग तरीकों से लोगों को सशक्त करता है, परन्तु आत्मा केवल एक ही है।

5 लोग बहुत से अलग-अलग तरीकों से प्रभु की सेवा करते हैं, परन्तु प्रभु केवल एक ही है।

6 लोग बहुत से अलग-अलग तरीकों से परमेश्वर के लिए काम करते हैं, परन्तु परमेश्वर केवल एक ही है। केवल वही है जो सब लोगों को इन सब तरीकों से कार्य करने के लिए सशक्त करता है।

7 प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर से विशिष्ट तरीके प्राप्त करता है जिसमें परमेश्वर का आत्मा उनके माध्यम से संगी विश्वासियों की सहायता करने के लिए कार्य करता है।

8 उदाहरण के लिए, परमेश्वर का आत्मा कुछ विश्वासियों को बुद्धिमानी से बोलने के लिए सशक्त करता है। अन्य विश्वासी ज्ञान के साथ बात कर सकते हैं, और वही आत्मा उन्हें ऐसा करने के लिए सशक्त करता है।

1 Corinthians 12:1

9 वही आत्मा कुछ विश्वासियों को विशेष तरीकों से परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए सशक्त करता है। वही आत्मा अन्य विश्वासियों को दूसरों को चंगा करने के लिए सशक्त करता है।

10 अन्य विश्वासी भी सामर्थी कामों को कर सकते हैं। अन्य विश्वासी भी परमेश्वर की ओर से मिले सन्देशों को बोल सकते हैं। अन्य विश्वासी भी यह निर्धारित कर सकते हैं कि कोई बात परमेश्वर के आत्मा की ओर से आई है या नहीं। कुछ विश्वासी अज्ञात भाषाएँ भी बोल सकते हैं। अन्य विश्वासी उन अज्ञात भाषाओं का अनुवाद भी कर सकते हैं।

11 वही आत्मा विश्वासियों को इन सब कामों को करने के लिए सशक्त करने का कार्य करता है। केवल एक ही पवित्र आत्मा है, और वही निर्णय लेता है कि प्रत्येक विश्वासी के द्वारा विशेष रूप से कैसे कार्य करना है।

12 {हम मानते हैं कि} एक व्यक्ति का शरीर एकता में मिलकर बना है, परन्तु शरीर में बहुत से अंग होते हैं। इसलिए, वे सभी शरीर के अंग, एक साथ मिलकर एक शरीर का निर्माण करते हैं, यह मायने नहीं रखता कि वे कितने सारे हैं। इसी रीति से हम मसीह {के बारे में भी सोच सकते हैं}।

13 अब, {परमेश्वर ने हमें इतनी निकटता से एक साथ जोड़ा है कि मानो} हम एक शरीर हों। {यह तब घटित हुआ जब} लोगों ने हमें बपतिस्मा दिया और उसके परिणामस्वरूप हमें वह आत्मा प्राप्त हुआ। {हम इस एक शरीर का निर्माण करते हैं} यद्यपि हम में से कुछ यहूदी लोग हैं और अन्य गैर-यहूदी लोग हैं, और यद्यपि हम में से कुछ दास हैं और अन्य स्वतंत्र लोग हैं। इसके अलावा, हम सभी ने इस एक आत्मा में ऐसे साझेदारी की जैसे कि हम सब ने एक कटोरे में से पिया।

14 जैसा कि तुम जानते हो कि शरीर का कोई एक अंग ही शरीर का निर्माण नहीं करता। बल्कि, {शरीर का निर्माण करने के लिए} इसमें शरीर के कई अंग लगते हैं।

15 कल्पना करो कि तुम्हारा पैर {तुम से बात कर सकता है, और उसने} कहा कि, चूँकि वह हाथ नहीं है, इसलिए वह तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित नहीं हो सकता। यह कारण उसे तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित होने से दूर नहीं करता।

16 फिर से, कल्पना करो कि तुम्हारा कान {तुम से बात कर सकता है, और उसने} कहा कि, चूँकि वह आँख नहीं है, इसलिए वह तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित नहीं हो सकता। यह कारण उसे तुम्हारे शरीर से सम्बन्धित होने से दूर नहीं करता।

17 कल्पना करो कि केवल आँखें ही तुम्हारे शरीर का निर्माण करती हैं। तुम कुछ भी सुन नहीं पाओगे! कल्पना करो कि केवल कान ही तुम्हारे शरीर का निर्माण करते हैं। तुम कुछ भी सूँघ नहीं पाओगे!

18 परन्तु जो {शरीर के बारे में} सत्य है वह यह है: परमेश्वर ने यह निर्धारित किया कि शरीर के प्रत्येक अंग को कैसे कार्य करना है, और उसने एक विशिष्ट कारण से शरीर के प्रत्येक अंग को शरीर से जोड़ा।

19 कल्पना करो कि {तुम्हारे शरीर के सभी अंग} शरीर का एक ही {प्रकार का} अंग हों। तब तुम्हारे पास वास्तव में शरीर होगा ही नहीं!

20 परन्तु जो {शरीर के बारे में} सत्य है वह यह है: शरीर के बहुत से {अलग-अलग} अंग होते हैं। हालाँकि, {एक साथ मिलकर वे} एक शरीर का निर्माण करते हैं।

21 फिर से कल्पना करो कि तुम्हारे शरीर के अंग बात कर सकते हैं। आँख कभी भी हाथ से नहीं कहेगी, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं है।" इसी रीति से, सिर कभी भी पाँवों से नहीं कहेगा, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है।"

22 बल्कि, जो सच है वह यह है कि शरीर के जिन अंगों को हम नाजुक समझते हैं, वे वास्तव में आवश्यक होते हैं।

23 इसके अलावा, हम शरीर के उन अंगों को अधिक महत्व देते हैं जिन्हें हम कम मूल्यवान समझते हैं। हम अपने शरीर के अशोभनीय अंगों के साथ अधिक शालीनता से बर्ताव करते हैं,

24 परन्तु हम अपने शरीर के शालीन अंगों के साथ किसी विशेष तरीके से बर्ताव नहीं करते। अंत में, वह परमेश्वर ही है जो शरीर के सब अंगों को एक शरीर में एक साथ रखता है, और वह कम मूल्यवान अंगों को अधिक मूल्यवान बनाता है।

25 {परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया} ताकि शरीर अलग-अलग अंगों में बँट न जाए। बजाए इसके, शरीर के अंग एक साथ

मिलकर काम करते हैं और शरीर के एक अंग को शरीर के अन्य अंगों पर विशेषाधिकार नहीं देते हैं।

26 इसलिए, शरीर के एक अंग में पीड़ा होने पर शरीर के सभी अंगों में पीड़ा होती है। जब कोई शरीर के किसी अंग की बड़ाई करता है तो शरीर के सब अंग आनन्द मनाते हैं।

27 {मैं यह सब इसलिए कहता हूँ क्योंकि} तुम सब मसीह की देह {के समान} हो। तुम में से प्रत्येक {उस देह में} शरीर के अंग {के समान} है।

28 उसी के अनुरूप, परमेश्वर ने उन लोगों को विशेष रूप से सशक्त किया है जो उसकी आराधना करते हैं। पहले कुछ लोग वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है। दूसरे कुछ लोग वे हैं जो परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं। तीसरे कुछ लोग वे हैं जो दूसरे विश्वासियों को शिक्षा देते हैं। इसके अलावा, कुछ लोग सामर्थी कामों को करते हैं। अन्य लोग दूसरों को चंगा कर सकते हैं, अन्य विश्वासियों की सहायता कर सकते हैं, विश्वासियों के समूह का मार्गदर्शन कर सकते हैं, या अज्ञात भाषाएँ बोल सकते हैं।

29 केवल कुछ ही ऐसे विश्वासी हैं जिन्हें परमेश्वर ने मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है। केवल कुछ ही परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं। केवल कुछ ही दूसरे विश्वासियों को शिक्षा देते हैं। केवल कुछ ही सामर्थी कामों को करते हैं।

30 केवल कुछ ही दूसरों को चंगा करते हैं। केवल कुछ ही अज्ञात भाषाएँ बोलते हैं। केवल कुछ ही {उन अज्ञात भाषाओं} का अनुवाद करते हैं।

31 अब मैं चाहता हूँ कि तुम उत्सुकतापूर्वक सबसे अधिक लाभकारी वरदानों की खोज करो। इसके बाद, मैं तुम्हें सबसे उत्तम काम के बारे में बताऊँगा जिसे तुम कर सकते हो।

1 Corinthians 13:1

1 कल्पना करो कि मैं कई मानवीय और देवदूत भाषाएँ बोल सकूँ, परन्तु मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता। तब मैं {बहुत शोर करने वाले,} एक ऊँचे स्वर के धातु वाले वाद्ययंत्र के समान तो होऊँगा{, परन्तु मैं किसी की सहायता नहीं कर पाऊँगा}।

2 फिर से, कल्पना करो कि मैं परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार कर सकूँ, कि मैं सब कुछ समझ और जान सकूँ, और यह कि मुझे इतना विश्वास हो कि मैं पहाड़ों का स्थान बदल सकूँ। परन्तु आगे कल्पना करो कि मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता। इस कारण से, और कुछ भी मायने नहीं रखता।

3 एक बार फिर से, कल्पना करो कि मैंने अपना सब कुछ उन लोगों को उपहार में दे दिया {जिनको भोजन की आवश्यकता थी}, और यह कि मैंने अपने शरीर की रक्षा नहीं की, जिसके परिणामस्वरूप लोग मेरा सम्मान करें। परन्तु आगे कल्पना करो कि मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता। {क्योंकि मैं दूसरों से प्रेम नहीं करता}, इसलिए मेरे द्वारा किए गए कामों में से कुछ भी मेरी सहायता नहीं करता।

4 जो दूसरों से प्रेम करते हैं वे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं और कृपापूर्वक कार्य करते हैं। वे नहीं चाहते कि दूसरे लोग उन अच्छी वस्तुओं को खो दें जो उनके पास हैं। वे अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें नहीं बोलते या ऐसे कार्य नहीं करते जैसे कि वे महान व्यक्ति हैं।

5 वे लज्जाजनक काम नहीं करते। वे केवल अपनी ही चिन्ता नहीं करते। वे शीघ्र ही क्रोधित नहीं होते। वे इस बात पर ध्यान नहीं लगाते कि दूसरों ने क्या गलत काम किया है।

6 जब लोग बुरे काम करते हैं तो वे आनन्द नहीं मनाते। बजाए इसके, वे सच बात का आनन्द मनाते हैं।

7 वे हमेशा {दूसरों} के साथ रहते हैं। वे हमेशा विश्वास करते हैं {कि परमेश्वर वही करेगा जो उत्तम है}, और वे हमेशा आश्वस्त रहते हैं {कि परमेश्वर वही करेगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है}। {जब बुरी बातें घटित होती हैं तो} वे हमेशा डटे रहते हैं।

8 जो दूसरों से प्रेम करते हैं वे ऐसा करना कभी बंद नहीं करते। हालाँकि, किसी दिन लोग परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार नहीं करेंगे। किसी दिन लोग अज्ञात भाषाएँ बोलना बंद कर देंगे। किसी दिन, लोग विशेष बातों को नहीं जानते होंगे।

9 {ये बातें अब घटित इसलिए नहीं होंगी,} क्योंकि हम विशेष बातों को पूर्णरूप से नहीं जानते, और परमेश्वर जो कहते हैं हम उसे पूर्णरूप से घोषित नहीं करते।

10 इसलिए, जो पूर्ण है उसका अनुभव हम तब करेंगे {जब यीशु वापस आएगा}, उस समय जो अपूर्ण है वह मायने नहीं रखेगा।

11 {यहाँ एक समरूपता है:} जब हम छोटे थे, तब हम बच्चों के समान बात करते थे। हम ने वैसे ही सोचा जैसे बच्चे सोचते हैं। हम ने वैसे ही निर्णय लिए जैसे बच्चे निर्णय लेते हैं। परन्तु जब हम बड़े हुए तो हम ने बच्चों के समान अभिनय करना बंद कर दिया।

12 इस समय, हम {परमेश्वर को} परोक्ष रूप से ऐसे देखते हैं, जैसे कि हम ने दर्पण में प्रतिबिम्ब देखा हो। हालाँकि, जब {यीशु वापस आएगा}, {तब हम परमेश्वर को} आमने-सामने देखेंगे। इस समय, हम {परमेश्वर को} पूर्णरूप से नहीं जानते हैं। हालाँकि, जब {यीशु वापस आएगा}, तब हम परमेश्वर को उतना ही जानेंगे जितना वह हमें जानता है।

13 अंत में, तीन बातें हैं जो हम हमेशा करते रहेंगे। हम {मसीह पर} विश्वास करेंगे, और {परमेश्वर ने जिसकी प्रतिज्ञा की है उसे वह करेगा इस बात की} पूरे विश्वास के साथ अपेक्षा करेंगे, और {परमेश्वर एवं दूसरे लोगों से प्रेम करेंगे}। हालाँकि, इन तीन बातों में {परमेश्वर एवं दूसरे लोगों से} प्रेम करना सबसे महत्वपूर्ण है।

1 Corinthians 14:1

1 तुम्हें हमेशा दूसरों से प्रेम करने की खोज करनी चाहिए। साथ ही, तुम्हें उत्सुकतापूर्वक इस बात की खोज करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा विशेष रूप से तुम्हें सशक्त करे, ताकि तुम परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करने में सक्षम हो जाओ।

2 {तुम्हें यह इच्छा इसलिए करनी चाहिए} क्योंकि जो लोग अज्ञात भाषा में बात करते हैं वे अन्य लोगों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बात करते हैं। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि कोई भी नहीं जान पाता कि वे क्या कह रहे हैं। बल्कि, जब पवित्र आत्मा उन्हें सशक्त करता है तो वे गुप्त बातें बोलते हैं।

3 दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं, वे दूसरे लोगों से बात करते हैं। वे अन्य विश्वासियों को दृढ़ होने में सहायता करते हैं, एवं अन्य विश्वासियों से उचित तरीके से व्यवहार करने का आग्रह करते हैं, और अन्य विश्वासियों को दिलासा देते हैं।

4 अज्ञात भाषा में बात करने वाले लोग स्वयं की ही दृढ़ होने में सहायता करते हैं। दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं, वे विश्वासियों के समूह की दृढ़ होने में सहायता करते हैं।

5 मैं चाहता हूँ कि तुम सब अज्ञात भाषाओं में बातें करो। हालाँकि, जो मैं और भी अधिक चाहता हूँ, वह यह है कि तुम परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करो। अज्ञात भाषाओं में बात करने की तुलना में परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करना अधिक महत्वपूर्ण और सहायक है। निःसन्देह, यदि कोई {अज्ञात भाषा की} व्याख्या करता है, तो यह {भी} विश्वासियों को दृढ़ करने में सहायता कर सकता है।

6 हे मेरे संगी विश्वासियों, यहाँ {जो मैं कहने की प्रयास कर रहा हूँ वह यह है}: {उदाहरण के लिए,} कल्पना करो कि मैं तुम से मिलने आया, और मैंने अज्ञात भाषाओं में बात की। तब मैं तुम्हारी बिलकुल सहायता नहीं कर पाऊँगा। वास्तव में तुम्हारी सहायता करने के लिए, मुझे उन बातों को {तुम पर} प्रकट करना होगा, उन बातों को जानने में तुम्हारी सहायता करनी होगी, परमेश्वर जो कहता है उसका {तुम पर} प्रचार करना होगा, या {तुम्हें} वह सिखाना होगा।

7 यहाँ तक कि ऐसी वस्तुएँ भी जो जीवित नहीं हैं परन्तु जिनका उपयोग हम आवाज निकालने के लिए करते हैं {वे भी उसका वर्णन करती हैं जो मैं कह रहा हूँ}। {जब कोई व्यक्ति} बाँसुरी या वीणा बजाता है, तो वह वाद्ययंत्र विभिन्न विशिष्ट ध्वनियाँ उत्पन्न करे। नहीं तो कोई नहीं समझ पाएगा कि वह व्यक्ति बाँसुरी या वीणा पर क्या बजाता है, {क्योंकि सभी ध्वनियाँ एक समान ही होंगी}।

8 इसके अलावा, कल्पना करो कि {जब कोई व्यक्ति एक तुरही का उपयोग दूसरों को चेतावनी देने के लिए करता है} तो उस तुरही से स्पष्ट आवाज नहीं निकलती। तब किसी को भी मालूम नहीं होगा कि उन्हें शत्रु से लड़ने के लिए तैयार होने की आवश्यकता है।

9 जब कभी तुम बात करते समय ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं करते जिनको दूसरे लोग पहचानते हैं, तो तुम {एक ऐसे वाद्ययंत्र के समान होते हो जो स्पष्ट ध्वनि उत्पन्न नहीं करता}। तुम जो कह रहे हो उसे कोई नहीं समझ पाएगा और तुम एक

1 Corinthians 14:1

ऐसे व्यक्ति {के समान} ठहरोगे जो किसी से भी बात नहीं करता।

10 यह बात सच प्रतीत होती है कि भाषाओं की एक बड़ी विविधता अस्तित्व में है। उनमें से प्रत्येक स्पष्ट रूप से संवाद करती है।

11 इसलिए, {उदाहरण के लिए,} जब मैं यह नहीं समझता कि कोई भाषा कैसे संचार करती है, तो मैं उन सभी के लिए अजनबी हूँ जो {वह भाषा} बोलते हैं, और वे मेरे लिए अजनबी हैं।

12 इसलिए, जो तुम्हें करना चाहिए वह यह है: क्योंकि तुम चाहते हो कि पवित्र आत्मा तुम्हें विशेष रूप से सशक्त करे, इसलिए तुम्हें विश्वासियों के समूह को दृढ़ होने में सहायता करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए {ताकि तुम उसका उपयोग करो जिसके लिए पवित्र आत्मा तुम्हें सशक्त करता है}।

13 इसलिए, जो लोग अज्ञात भाषाओं में बात करते हैं, उन्हें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उनको उसकी व्याख्या करने में भी सक्षम करे {जो वे कह रहे हैं}।

14 {उदाहरण के लिए,} जब मैं किसी अज्ञात भाषा में {परमेश्वर से} प्रार्थना करता हूँ, तो मेरा केवल एक भाग प्रार्थना कर रहा होता है क्योंकि मैं जो कह रहा हूँ उसके बारे में मैं सोच नहीं रहा हूँ।

15 इसलिए, {तुम्हें और मुझे जो करना चाहिए} वह यह है। हमें केवल अपने कुछ भागों के साथ ही नहीं बल्कि हमें उस बारे में विचार करके भी {परमेश्वर से} प्रार्थना करनी चाहिए कि हम क्या कह रहे हैं। हमें केवल अपने कुछ भागों के साथ ही नहीं बल्कि हमें उस बारे में विचार करके भी गीत गाना चाहिए कि हम क्या गा रहे हैं।

16 कल्पना करो कि जो लोग {अज्ञात भाषाओं को} नहीं समझते, और वे तुम्हें परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुनते हैं जब तुम अपने कुछ भागों का उपयोग कर रहे होते हो, {और तुम उस बारे में विचार नहीं कर रहे हो जो तुम कह रहे हो}। जब तुम परमेश्वर की स्तुति करते हो तो वे लोग उसमें भाग इसलिए नहीं ले पाएँगे क्योंकि वे उस {अज्ञात भाषा} को नहीं समझते जिसे तुम बोल रहे हो।

17 इस परिस्थिति में, तुम ही उचित रूप से परमेश्वर की स्तुति करते हो। हालाँकि, तुम अन्य लोगों को दृढ़ होने में सहायता नहीं कर पाते।

18 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम सब से अधिक अज्ञात भाषाओं में बात करता हूँ।

19 हालाँकि, जब मैं परमेश्वर की आराधना करने के लिए संगी विश्वासियों के साथ इकट्ठा होता हूँ, तो मैं केवल उन कुछ ही शब्दों को बोलना चाहता हूँ जिनके बारे में मैं विचार करता हूँ। इस रीति से, मैं {केवल स्वयं को ही नहीं परन्तु} अन्य विश्वासियों को भी सिखा सकता हूँ। अज्ञात भाषा में लाखों शब्द {बोलने} की तुलना में {मेरे लिए ऐसा करना बेहतर है}।

20 हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं नहीं चाहता कि तुम {इन बातों के बारे में} छोटे बालकों के समान मूर्ख रहो। बल्कि, तुम्हें {इन बातों के बारे में} एक पूर्णतः विकसित वयस्क के समान बहुत कुछ मालूम होना चाहिए। जो बातें गलत हैं {केवल} उन्हें न करने में तुम्हें छोटे बालकों {के समान} होना चाहिए।

21 जो प्रभु कहता है उसे भविष्यद्वक्ता यशायाह ने पवित्रशास्त्र में लिखा है, "मैं अपनी प्रजा इस्राएल से उन लोगों के द्वारा बात करूँगा जो विदेशी भाषा बोलते हैं। हालाँकि, इस तरीके से वे मेरी नहीं सुनेंगे।"

22 इसलिए, अज्ञात भाषाओं में बात करना यह दर्शाता है कि परमेश्वर उन लोगों का न्याय करता है जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करते, न कि उन लोग का जो {मसीह पर} विश्वास करते हैं। दूसरी ओर, परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करना {यह दर्शाता है कि परमेश्वर उन लोगों के प्रति दयालुता से कार्य करता है} जो {मसीह पर} विश्वास करते हैं, न कि उन लोगों के प्रति जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करते।

23 इसलिए, कल्पना करो कि विश्वासियों का पूरा समूह परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक साथ इकट्ठा हुआ, और तुम सब ने अज्ञात भाषाओं में बातें की। आगे कल्पना करो कि जो {अज्ञात भाषाओं को} नहीं समझते या जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करते, वे लोग तुम्हारे समूह में आते हैं। तब वे {दूसरों} को बताएँगे कि तुम लोग पागल हो।

1 Corinthians 14:1

24 दूसरी ओर, कल्पना करो कि तुम सभी ने परमेश्वर द्वारा
कही गई बातों का प्रचार किया। आगे कल्पना करो कि कोई
व्यक्ति जो {मसीह पर} विश्वास नहीं करता या जो {अज्ञात
भाषाओं को} नहीं समझता, वह तुम्हारे समूह में आता है। तुम
जो कुछ भी बोलोगे, वह उन बातों को उन पर प्रकट करेगा
और उन बातों से उनका सामना करेगा {जो गलत काम
उन्होंने किए हैं}।

25 {इस रीति से,} सब लोगों को वह बातें पता चल जाएँगी जो
ये {आगंतुक} दूसरों से छिपाते हैं। प्रतिउत्तर में, वे घुटने टेक
कर परमेश्वर की आराधना करेंगे। वे {दूसरों को} इस बात का
प्रचार करेंगे कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे साथ है।

26 हे मेरे संगी विश्वासियों, जो मेरे कहने का अर्थ है वह यह है।
जब कभी तुम {परमेश्वर की आराधना करने के लिए} एक
साथ इकट्ठा होते हो, तो प्रत्येक विश्वासी को {कुछ करना होता
है}। कुछ गीत गाते हैं, अन्य लोग सिखाते हैं, दूसरे लोग बातों
को प्रकट करते हैं, अन्य लोग अज्ञात भाषा में बोलते हैं, दूसरे
लोग अज्ञात भाषा का अनुवाद करते हैं। अन्य विश्वासियों को
दृढ़ होने में सहायता करने के लिए विश्वास करने वालों को इन
सभी कामों को करना चाहिए।

27 जब विश्वासी अज्ञात भाषाओं में बात कर रहे हों, तो
अधिकतम दो या तीन लोग ही {बोलें}। वे एक के बाद एक
बोलें, और कोई जन यह व्याख्या करे कि {वे क्या कह रहे हैं}।

28 दूसरी ओर, जब विश्वासी परमेश्वर की आराधना करने के
लिए एक साथ इकट्ठे होते हैं और अज्ञात भाषाओं की व्याख्या
करने वाला कोई व्यक्ति वहाँ नहीं है, तो जो कोई भी अज्ञात
भाषाओं में बात कर सकता है, वह चुप रहे। {ऊँचे स्वर में बात
करने के} बजाए, वे गुप्त में {अज्ञात भाषाओं में} परमेश्वर से
बात करें।

29 इसी रीति से, वे {लगभग} दो या तीन लोग ही बोलें जो
परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं। बाकी सब
यह निर्धारित करें कि {जो वे कहते हैं} वह सही है या गलत।

30 अब, जब कभी परमेश्वर किसी व्यक्ति पर कुछ प्रकट
करता है {जब विश्वास करने वाले एक साथ इकट्ठा होते हैं तो
जो किसी दूसरे व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का
प्रचार करते हुए सुन रहा है}, तो जो व्यक्ति बोल रहा है उसे
बोलना बंद कर देना चाहिए।

31 {तुम्हें ऐसा इसलिए करना चाहिए} ताकि हर किसी को एक
के बाद एक, परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करने का
अवसर मिले। इस रीति से, हर कोई कुछ न कुछ सीखता है,
और हर कोई दृढ़ हो जाता है।

32 जो परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का प्रचार करते हैं, वे यह
नियंत्रित करते हैं कि वे इसका कैसे और कब प्रचार करें।

33 {यह इसलिए सच है} क्योंकि जो शान्तिपूर्ण और व्यवस्थित
है, वही परमेश्वर के गुण प्रकट करता है, न कि वह जो
अव्यवस्थित है। {मैं चाहता हूँ कि तुम भी वैसे ही व्यवहार
करो} जैसे वे बाकी सब लोग व्यवहार करते हैं जिन्हें परमेश्वर
ने अपने लिए अलग किया है, जब वे परमेश्वर की आराधना
करने के लिए इकट्ठे होते हैं।

34 जब विश्वास करने वाले एक साथ इकट्ठे होते हैं {और जब
उनके पति बोल रहे हों} तो पत्नियों को चुप रहना चाहिए। उन्हें
बात नहीं करनी चाहिए बल्कि {अपने पतियों का} सम्मान
करना चाहिए और उनका आज्ञापालन करना चाहिए। {उन्हें
ऐसा इसलिए करना चाहिए} क्योंकि हम {परमेश्वर की}
व्यवस्था में यही पाते हैं।

35 अब, जब पत्नियाँ {जो उनके पति बोल रहे हैं उसके बारे में}
अधिक जानना चाहती हैं, तो उन्हें अपने घरों में अपने पति से
प्रश्न पूछने चाहिए। {उन्हें ऐसा इसलिए करना चाहिए} क्योंकि
जब विश्वास करने वाले एक साथ इकट्ठे होते हैं {और जब
उनके पति बोल रहे हों} तो जो पत्नियाँ बात करती हैं {वे स्वयं
को और अपने परिवारों को} लज्जित करती हैं।

36 {यदि तुम मेरे द्वारा कही गई बात को पसंद नहीं करते,} तो
स्मरण रखो कि परमेश्वर द्वारा कही गई बातों का स्रोत तुम नहीं
हो, और जिन्होंने सुना है {और जिन्होंने परमेश्वर द्वारा कही गई
बातों पर विश्वास किया} ऐसे लोग केवल तुम ही नहीं हो।

37 वे सब लोग जो स्वयं को ऐसा मानते हैं जो परमेश्वर द्वारा
कही गई बातों का प्रचार करते हैं या जिन्हें पवित्र आत्मा ने
विशेष रूप से सशक्त किया है, उन्हें यह समझना चाहिए कि
जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, वह प्रभु स्वयं चाहता है।

38 दूसरी ओर, तुम्हें ऐसे किसी भी व्यक्ति को {आधिकारिक}
रूप में नहीं पहचानना चाहिए जो यह नहीं समझते {कि प्रभु
को मेरे द्वारा कही गई बातों की आवश्यकता है}।

39 अंत में, हे मेरे संगी विश्वासियों, उत्सुकतापूर्वक परमेश्वर
द्वारा कही गई बातों का प्रचार करने की खोज करो। इसके
अलावा, लोगों को अज्ञात भाषाएँ बोलने से मत रोको।

40 अंत में, {जब तुम परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक
साथ इकट्ठे होते हो}, तो तुम्हें हमेशा सम्मानजनक और
व्यवस्थित तरीकों से व्यवहार करना चाहिए।

1 Corinthians 15:1

1 हे संगी विश्वासियों, इसके बाद, मैं तुम्हें उस शुभ सन्देश के
बारे में सूचित कर रहा हूँ जो मैंने तुम्हें बताया था। तुम ने यह
शुभ सन्देश {मुझ से} जाना, और तुम इस पर दृढ़तापूर्वक
विश्वास करते हो।

2 जब तुम उस सन्देश पर दृढ़तापूर्वक विश्वास करना जारी
रखते हो जो मैंने तुम्हें सुनाया, तो परमेश्वर उस सन्देश के
माध्यम से तुम्हारा उद्धार भी करता है। अन्यथा, तुम ने बिना
किसी कारण के {उस सन्देश} पर विश्वास कर लिया।

3 पहली बात जो मैंने तुम्हें बताई, और जो मैंने {प्रभु से} जानी
वह यह है: जैसा कि पवित्र पुस्तकों {के लेखकों} {ने लिखा है}
कि मसीह हमारे पापों को दूर करने के लिए {क्रूस पर} मरा।

4 लोगों ने उसे गाड़ दिया, परन्तु {उसके बाद} तीसरे दिन,
परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया, जैसा कि पवित्र
पुस्तकों {के लेखकों} {ने लिखा है}।

5 वह पतरस को और फिर {यीशु के शेष} 12 {निकटतम
अनुयायियों} को दिखाई दिया।

6 उसके बाद, वह एक बार में 500 से अधिक संगी विश्वासियों
को दिखाई दिया। हालाँकि इनमें से कुछ लोगों की मृत्यु हो
चुकी है, परन्तु लगभग सब के सब अभी भी जीवित हैं।

7 उसके बाद, वह याकूब को और फिर उन सभी को दिखाई
दिया, जिन्हें उसने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा था।

8 अंत में, जब वह उन सभी को दिखाई दे चुका, उसके बाद
वह मुझे भी दिखाई दिया। इसलिए, {क्योंकि मैं वह व्यक्ति बन
गया जिसे यीशु ने बाकी सब के बाद उसका प्रतिनिधित्व करने
के लिए भेजा था}, मैं उस बालक के समान हूँ जिसने
असामान्य तरीके से जन्म लिया था।

9 वास्तव में, मैं हर उस व्यक्ति की तुलना में कम महत्वपूर्ण
और सम्माननीय हूँ जिसे मसीह ने उसका प्रतिनिधित्व करने
के लिए भेजा था। सचमुच, चूँकि मैंने उन लोगों को नष्ट करने
की प्रयास किया था जो मसीह पर विश्वास करते हैं, इसलिए मैं
इसके योग्य नहीं हूँ जब दूसरे लोग मुझे वह कहकर पुकारते
हैं जिसे मसीह ने उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा हो।

10 हालाँकि, परमेश्वर ने अनुग्रहपूर्वक मुझे ऐसा व्यक्ति बनाया
जिसे मसीह ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा। इसके
अलावा, उसने मुझे जो कुछ सौंपा है, उसके परिणामस्वरूप
बड़े-बड़े काम हुए हैं। वास्तव में, मैंने अन्य सभी {जिन्हें मसीह
ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा} की तुलना में
अधिक परिश्रम किया। निःसन्देह, यह असल में मैं नहीं था
{जिसने इतना परिश्रम किया}। बजाए इसके, यह परमेश्वर ही
था {जिसने इतना कुछ किया} जो अनुग्रहपूर्वक मेरे माध्यम से
काम कर रहा था।

11 अन्त में, मैं और दूसरे प्रेरित, दोनों उस शुभ सन्देश का
प्रचार करते हैं जिसका वर्णन मैंने किया, और तुम ने उस शुभ
सन्देश पर भरोसा किया।

12 क्योंकि सभी विश्वासियों का कहना है कि परमेश्वर ने मसीह
को फिर से जीवित किया, इसलिए तुम्हारे समूह में कोई भी
यह दावा नहीं कर रहा होगा कि जो लोग मर चुके हैं वे फिर
से जीवित नहीं होंगे।

13 कल्पना करो {कि यह सच हो} कि जो लोग मर चुके हैं वे
फिर से जीवित नहीं होंगे। {उस मामले में,} परमेश्वर ने मसीह
को फिर से जीवित नहीं किया।

14 कल्पना करो {कि यह सच हो} कि परमेश्वर ने मसीह को
फिर से जीवित नहीं किया। उस मामले में, हम ने बिना किसी
कारण के {शुभ सन्देश} का प्रचार किया और तुम ने उस पर
विश्वास किया।

15 इसके अलावा, हम ऐसे लोग ठहरेंगे जो परमेश्वर के बारे में
झूठ बोलते हैं, क्योंकि हम ने परमेश्वर के सामने घोषणा की
कि उसने मसीह को फिर से जीवित किया, जबकि उसने

वास्तव में ऐसा नहीं किया। यह सब तब सच होगा यदि परमेश्वर उनको फिर से जीवित न करे जो मर गए हैं।

16 {तुम कह सकते हो कि यह सच है जब तुम} कल्पना करते हो कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें परमेश्वर फिर से जीवित नहीं करता। {उस मामले में,} परमेश्वर ने मसीह को भी फिर से जीवित नहीं किया।

17 कल्पना करो {कि यह सच है} कि परमेश्वर ने मसीह को फिर से जीवित नहीं किया। {उस मामले में,} तुम ने बिना किसी कारण के {शुभ सन्देश} पर विश्वास किया, और पाप तुम्हें नियंत्रित करना जारी रखता है।

18 फिर से उस मामले में, जो विश्वासी मर चुके हैं वे फिर कभी जीवित नहीं होंगे।

19 कल्पना करो कि केवल मरने से पहले ही हम विश्वास के साथ मसीह से {हमारी सहायता करने की} अपेक्षा कर सकते हैं। {उस मामले में,} सब लोगों को किसी और के लिए {खेद प्रकट करने} की तुलना में हमारे लिए अधिक खेद प्रकट करना चाहिए।

20 परन्तु जो सच है वह यह है: परमेश्वर ने मसीह को फिर से जीवित किया, और वह उन लोगों में से पहला है जो मर चुके हैं {जिन्हें परमेश्वर फिर से जीवित करेगा}।

21 {तुम कह सकते हो कि यह सच है,} क्योंकि एक मनुष्य {आदम} ने जो किया, उसके माध्यम से लोग मरते हैं। वैसे ही जो लोग मर चुके हैं, वे उस एक मनुष्य (यीशु) के माध्यम से फिर से जीएँगे।

22 मेरे कहने का अर्थ यह है कि जिस प्रकार से सब लोग मर कर इसलिए समाप्त हो जाते हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें आदम के साथ एकजुट कर दिया, उसी रीति से सब {विश्वास करने वाले} फिर से इसलिए जीवित हो जाएँगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें मसीह के साथ एकजुट करता है।

23 अब, वे सब लोग {जो फिर से जीवित हो जाएँगे} बारी-बारी से ऐसा करते हैं: पहले मसीह और फिर वे जो मसीह के हैं, जब वह {फिर से} वापस आएगा।

24 उसके बाद, जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है, जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहे हैं वह {घटित होगा}। उस समय, मसीह हर उस व्यक्ति और हर उस बात से छुटकारा दिलाएगा जो शासन करती है और अधिकार करती है और नियंत्रण करती है। फिर, वह परमेश्वर को, {जो हमारा पिता है} राज्य के साथ प्रस्तुत करेगा {ताकि परमेश्वर सब पर शासन करे}।

25 जैसे {यह काम करता है} वह यह है: परमेश्वर ने निर्णय लिया कि मसीह तब तक शासन करेगा जब तक कि वह उन सभी पर विजय प्राप्त नहीं कर लेता जो उसका विरोध करते हैं।

26 अंतिम बात जो मसीह का विरोध करती है, जिससे वह छुटकारा पाएगा, वह यह है कि लोग मरते हैं।

27 अब, {दाऊद ने लिखा,} "उसने उसे हर उस बात पर विजय दिला दी जो उसका विरोध करती है।" निःसन्देह, "हर उस बात" में परमेश्वर शामिल नहीं है, जो वही है जिसने "उसे हर उस बात पर विजय दिला दी।"

28 इसलिए जब वह हर बात पर विजय पा चुका है, तब परमेश्वर पुत्र उसके अधीन हो जाएगा, जिसने उसे हर उस बात पर विजय दिला दी। इस रीति से, परमेश्वर सभी बातों पर विजय प्राप्त करेगा और शासन करेगा।

29 अब, उन लोगों पर ध्यान दो जो उन लोगों की सहायता करने के लिए दूसरों को बपतिस्मा देते हैं जो मर गए हैं। इसके अलावा, फिर से कल्पना करो कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें परमेश्वर फिर कभी जीवित नहीं करता। {उस मामले में,} लोगों के पास मरे हुए लोगों की सहायता करने के लिए दूसरों को बपतिस्मा देने का कोई कारण नहीं है।

30 और भी बढ़कर, {उस मामले में,} हमारे लिए {जो शुभ सन्देश का प्रचार करते हैं} लगातार स्वयं को खतरे में डालने का कोई कारण नहीं है {जैसा कि हम करते हैं}।

31 सचमुच, मैं बहुत बार मरने का जोखिम उठाता हूँ। हे संगी विश्वासियों, जैसे मैं तुम पर घमण्ड करता हूँ उसके द्वारा मैं शपथ खाता हूँ {कि यह सच है}, जो मैं इसलिए करता हूँ क्योंकि परमेश्वर ने हम सब को मसीह के साथ {जो} हमारा प्रभु यीशु है एकजुट किया है।

32 कल्पना करो कि मैं उस समय पर केवल मानवीय बातों के
बारे में सोच रहा था, जब मैं उन लोगों के विरुद्ध संघर्ष कर रहा
था जिन्होंने इफिसुस नगर का दौरा करते समय मेरा विरोध
किया था। {उस मामले में, उनके विरुद्ध संघर्ष करने से} मुझे
बिलकुल भी लाभ नहीं होता। एक बार फिर से कल्पना करो
कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें परमेश्वर फिर से जीवित नहीं
करता है। {उस स्थिति में,} हमें {वही करना चाहिए जो कई
लोग करने के लिए कहते हैं}: {खाना} खाओ, और {दाखरस}
पीओ, क्योंकि हम अति शीघ्र मर जाएँगे।

33 जो गलत है उस पर तुम्हें विश्वास नहीं करना चाहिए। {यह
लोकप्रिय कहावत सच है:} "दुष्ट मित्र उस व्यक्ति को भटका
देते हैं जो सामान्य रूप से उचित कार्य करता है।"

34 मैं चाहता हूँ कि तुम सचेत होकर सही तरीके से काम करना
आरम्भ करो। जो गलत है उसे तुम्हें करते नहीं रहना चाहिए।
{मैं इन बातों की आज्ञा इसलिए देता हूँ} क्योंकि तुम्हारे समूह
के कुछ लोग परमेश्वर को नहीं जानते हैं। मैं तुम्हें लज्जित
महसूस करवाने के लिए यह कहता हूँ।

35 अब कोई व्यक्ति इस बारे में पूछ सकता है कि जो लोग मर
गए हैं वे फिर से किस रीति से जीवित होंगे और इस बारे में कि
वे कौन सा रूप धारण करेंगे।

36 {यदि तुम उन प्रश्नों के उत्तर नहीं जानते हो,} तो तुम स्पष्ट
रूप से विचार नहीं कर रहे हो! {केवल इस बारे में विचार
करो:} जो बीज तुम भूमि में डालते हैं, उसके उगने से पहले
ही उसे मरना होगा।

37 उस बीज {के बारे में बोलते हुए} जिसे तुम भूमि में डालते
हो, {तुम जानते हो कि} वह पौधे के रूप में नहीं है। बल्कि,
वह केवल बीज है। यह बात सच है चाहे हम गेहूँ के बारे में
बात कर रहे हों या किसी अन्य फसल की।

38 वास्तव में, परमेश्वर ही बीजों को उन रूपों में विकसित
करता है जिन्हें वह चुनता है, और प्रत्येक प्रकार के बीज का
एक विशिष्ट रूप होता है {जिसमें वह बढ़ता है}।

39 विभिन्न प्राणियों के शारीरिक अंग भिन्न-भिन्न होते हैं।
उदाहरण के लिए, मनुष्य, स्तनधारी, पक्षी और मछली सभी
के भिन्न-भिन्न प्रकार के शारीरिक अंग होते हैं।

40 कुछ वस्तुओं का अस्तित्व स्वर्ग में है, और अन्य वस्तुओं का
अस्तित्व पृथ्वी पर है। स्वर्ग की वस्तुओं के रूप एक तरीके से
महिमामय हैं, जबकि पृथ्वी पर की वस्तुओं के रूप दूसरे
तरीके से महिमामय हैं।

41 {इसके आगे,} सूर्य, चंद्रमा और तारे भिन्न-भिन्न तरीकों से
महिमामय हैं। वास्तव में, प्रत्येक तारा अपने विशिष्ट तरीके से
महिमामय है।

42 वह तरीका यह है {जो पूर्णरूप से इस बात पर लागू होता
है कि} जो लोग मर चुके हैं वे फिर से कैसे जीवित हो जाएँगे।
लोग एक सड़ते हुए शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, परन्तु
परमेश्वर उसे फिर से जीवित कर देता है ताकि वह कभी मर
न सके।

43 लोग उस शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, जिसका कोई आदर
नहीं करता, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित करता है ताकि
सब उसका आदर करें। लोग एक निर्बल शरीर को भूमि में
गाड़ देते हैं, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित कर देते हैं
ताकि वह बलवान हो।

44 लोग इस संसार के शरीर को भूमि में गाड़ देते हैं, परन्तु
परमेश्वर उसे फिर से जीवित करता है ताकि वह उस संसार
का हो जाए जिसे परमेश्वर नया करेगा। जैसे कुछ शरीर इस
संसार के हैं, वैसे ही कुछ शरीर उस संसार के हैं जिसे परमेश्वर
नया करेगा।

45 {तुम कह सकते हैं कि यह सच है} क्योंकि मूसा ने लिखा,
"परमेश्वर ने पहले मनुष्य, आदम की एक जीवित प्राणी के
रूप में सृष्टि की जो इस संसार का था।" {दूसरी ओर, यीशु,
जो} दूसरे आदम के समान है, अब उस संसार का है जिसे
परमेश्वर नया करेगा और वह दूसरों को जीवन प्रदान करता
है।

46 अब {पहले आदम का} शरीर जो इस संसार का है, पहले
अस्तित्व में आया, और उसके बाद ही {अंतिम आदम का
शरीर} अस्तित्व में आया जो उस संसार का है जिसे परमेश्वर
नया करेगा।

47 {आदम, जो} पहले {प्रकार के} मनुष्य का प्रतिनिधित्व
करता है, पृथ्वी का था। {वास्तव में,} परमेश्वर ने उसकी सृष्टि
मिट्टी से की। {दूसरी ओर, यीशु, जो} दूसरे {प्रकार के} मनुष्य
का प्रतिनिधित्व करता है, स्वर्ग का है।

1 Corinthians 16:1

48 पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग आदम के समान हैं। स्वर्ग में रहने वाले सभी लोग यीशु के समान हैं।

49 वर्तमान में हमारे शरीर {आदम के शरीर} जैसे हैं जो इस संसार के हैं। उसी रीति से, हमें इस तरीके से जीवन व्यतीत करना चाहिए कि हमारे शरीर अंत में {यीशु के शरीर} के समान हो जाएँ, जो उस संसार का है जिसे परमेश्वर नया करेगा।

50 हे मेरे संगी विश्वासियों, यह सुनो: मानवीय शरीर जैसे वे वर्तमान में अस्तित्व में हैं, वे परमेश्वर के राज्य में भाग नहीं ले सकते जो सदाकाल तक बना रहता है, चूँकि वे नाश जाते हैं और मर जाते हैं।

51 ध्यान दो! मैं तुम्हें कुछ ऐसा बताने जा रहा हूँ जिसे अब परमेश्वर ने प्रकट किया है। हम सभी नहीं मरेंगे, परन्तु परमेश्वर हम सभी को बदल देगा।

52 एक क्षण में {वह हमें बदल देगा}, जितनी तेजी से कोई व्यक्ति पलक झपकाता है। {यह तब घटित होगा} जब {एक स्वर्गदूत} उस तुरही को फूँकेगा जो संकेत देती है कि यह संसार समाप्त हो रहा है। जब {एक स्वर्गदूत} उस तुरही को फूँकता है, तो परमेश्वर उन्हें फिर से जीवित कर देगा जो मर गए हैं ताकि वे कभी मर न सकें, और वह उन सब को बदल देगा जो अभी जीवित हैं।

53 इसलिए, जो शरीर नाश होकर मर जाते हैं, उन्हें ऐसे शरीर में बदल जाने की आवश्यकता है जो सदाकाल तक बना रहता है और कभी नहीं मर सकता।

54 जब हमारे शरीर जो नाश होकर मर जाते हैं, उन शरीरों में बदल जाएँगे जो सदाकाल तक बने रहते हैं और कभी नहीं मर सकते, उस समय अंत में वह घटित होगा जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने लिखा है: "परमेश्वर ने इसकी सृष्टि की है ताकि लोग अब न मरें।"

55 {इसके आगे,} "जब लोग मरते हैं, तो यह उन्हें नष्ट नहीं करता या चोट नहीं पहुँचाता है।"

56 लोग मरते हैं क्योंकि पाप के कारण उनकी मृत्यु होती है, और ऐसा इसलिए घटित होता है क्योंकि व्यवस्था पाप के दण्ड के रूप में मृत्यु को निर्दिष्ट करता है।

57 हालाँकि, मैं परमेश्वर की स्तुति इसलिए करता हूँ क्योंकि उसने हमें {जैसे हम पाप करते हैं और जैसे हम मरते हैं} उस पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। {उसने यह उस काम के द्वारा किया है} जो हमारे प्रभु यीशु मसीह ने किया है।

58 इसलिए फिर, हे मेरे संगी विश्वासियों जिनसे मैं प्रेम करता हूँ {जो तुम जानते हैं वह सत्य है}। लगातार अधिक से अधिक प्रभु की सेवा करो। {तुम्हें इन कामों को इसलिए करना चाहिए} क्योंकि तुम जानते हो कि तुम {प्रभु की सेवा करने के लिए} जो कुछ करते हो उसका परिणाम महान बातों में प्राप्त होगा, चूँकि परमेश्वर ने तुम्हें प्रभु के साथ एकजुट किया है।

1 Corinthians 16:1

1 अब मैं उस धन के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ जो मैं परमेश्वर के लोगों {जो यहूदी हैं} के लिए एकत्र कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम भी वही करो जो मैंने गलतिया प्रान्त में {रहने वाले} विश्वासियों के समूहों को करने का निर्देश दिया था।

2 प्रत्येक रविवार को, तुम में से प्रत्येक को जो कुछ भी तुम ने कमाया है उसमें से कुछ धन निकालकर सहेजना चाहिए। इस रीति से, जब मैं तुम से मिलने आऊँगा तो मुझे धन इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

3 अपने समूह से कुछ भरोसे के योग्य लोगों को चुन लो। जब मैं तुम से मिलने आऊँगा, तो {जो तुम ने इकट्ठा किया है} मैं उनसे ही यरूशलेम नगर ले जाने के लिए कहूँगा। साथ ही, मैं उन्हें पत्रियाँ भी दूँगा {जिसमें लिखा हो कि मैंने उन्हें अधिकृत किया है}।

4 तुम और मैं निर्धारित कर सकते हैं कि मुझे भी {यरूशलेम} जाना चाहिए। उस मामले में, वे लोग {जिन्हें तुम चुनते हो} मेरे साथ यात्रा करेंगे।

5 मकिदुनिया प्रान्त से होकर यात्रा करने के बाद जो मेरे मार्ग में ही है, मैं तुम से मिलने आ रहा हूँ।

1 Corinthians 16:1

6 वास्तव में, मैं तुम्हारे साथ कुछ समय, शायद पूरी सर्दी बिताऊँ। इस रीति से, तुम मुझे आगे कहीं भी जाने का निर्णय करने के लिए यात्रा करने में मेरी सहायता कर सकते हो।

7 {मैं ये योजनाएँ इसलिए बना रहा हूँ} क्योंकि मैं अभी थोड़े समय के लिए तुम्हारे पास आने के बजाए तुम्हारे साथ लम्बा समय बिताने की प्रतीक्षा करूँगा। मुझे विश्वास के साथ ऐसा करने की अपेक्षा तब तक है जब तक कि यह वही कार्य है जो प्रभु चाहता है {कि मैं करूँ}।

8 अभी के लिए, मैं पिन्तेकुस्त के पर्व तक यहीं इफिसुस नगर में रहने की योजना बना रहा हूँ।

9 {मैं यहाँ इसलिए रह गया हूँ} क्योंकि परमेश्वर ने मुझे प्रभावी ढंग से और स्वतंत्र रूप से शुभ सन्देश का प्रचार करने की अनुमति दी है। {इसके अलावा, मुझे} बड़ी संख्या में ऐसे लोगों का विरोध करना पड़ेगा जो मेरे विरुद्ध काम कर रहे हैं।

10 जब कभी तीमुथियुस {तुम्हारे नगर में} आए, तो सुनिश्चित करो कि जब वह तुम्हारे साथ हो तो वह सुरक्षित महसूस करे। {तुम्हें यह इसलिए करना है} क्योंकि वह {शुभ सन्देश का प्रचार करने के द्वारा} प्रभु की सेवा करता है, ठीक वैसे ही जैसे मैं करता हूँ।

11 इसलिए उसके साथ अनादरपूर्वक बर्ताव न करना। बजाए इसके, मेरे पास वापस यात्रा करने में उसकी सहायता करके एक मित्रतापूर्ण तरीके से कार्य करना। {तुम्हें यह इसलिए करना चाहिए} क्योंकि मुझे आशा है कि वह अन्य विश्वासियों के साथ {जो मुझ से मिलने के लिए यात्रा कर रहे हैं} मेरे पास वापस आएगा।

12 अब मैं अपने संगी विश्वासी अपुल्लोस के बारे में बात करने की ओर बढ़ रहा हूँ। मैंने उससे दृढ़तापूर्वक आग्रह किया कि वह अन्य विश्वासियों के साथ {जो तुम से मिलने के लिए यात्रा कर रहे थे} तुम्हारे पास जाए। हालाँकि, उसने दृढ़तापूर्वक निर्णय लिया कि यह तुम से मिलने का सही समय नहीं है। बजाए इसके, जब उसे लगेगा कि यह सही समय है तो वह तुम से मिलने आएगा।

13 {जो गलत है} उसके विषय में सावधान रहो! दृढ़तापूर्वक {शुभ सन्देश पर} विश्वास करो! साहसी बनो! दृढ़ निश्चयी रहो!

14 जब भी तुम कुछ सोचो या करो तो तुम्हें दूसरों से प्रेम करने पर ध्यान देना चाहिए।

15 तुम जानते हो कि स्तिफनास के घर में रहने वाले लोग अखाया प्रान्त में सबसे पहले {शुभ सन्देश पर विश्वास करने वाले लोग} थे। इसके अलावा, वे परमेश्वर के लोगों की सेवा करने के लिए चुने गए हैं। हे मेरे संगी विश्वासियों, मैं तुम से विनती करता हूँ

16 कि उनका और उनके जैसे अन्य लोगों का सम्मान करो और उनकी आज्ञा का पालन करो। वास्तव में, हमारे साथ {शुभ सन्देश का प्रचार करने के लिए} कठिन परिश्रम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का {तुम्हें सम्मान करना चाहिए और उनका आज्ञापालन करना चाहिए}।

17 मैं प्रसन्न हूँ कि स्तिफनास, फूरतूनातुस और अखइकुस यहाँ पहुँच गए हैं। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि उन्होंने मुझे तुम सभी के साथ जुड़ने की अनुमति दी है, भले ही तुम मेरे साथ नहीं हो।

18 उन्होंने मुझे और तुम्हें दोनों को प्रोत्साहित और ऊर्जावान किया। इसलिए, तुम्हें उनका और उनके जैसे अन्य लोगों का सम्मान करना चाहिए।

19 यहाँ आसिया प्रान्त के विश्वासियों के समूह तुम्हें नमस्कार कहते हैं। अक्विला और प्रिस्किल्ला, उन लोगों के रूप में जिन्हें परमेश्वर ने प्रभु के साथ एकजुट किया है, प्रेमपूर्वक तुम्हें नमस्कार कहते हैं। जो विश्वास करने वाले उनके घर में इकट्ठा होते हैं {वे भी तुम्हें नमस्कार कहते हैं}।

20 सब संगी विश्वासी {जो मेरे साथ हैं} तुम्हें नमस्कार कहते हैं। एक दूसरे का प्रेम से स्वागत करो।

21 मैं, पौलुस, {तुम्हें} नमस्कार कहता हूँ। मैं {ये अंतिम शब्द} {बजाए मेरे लेखक से उन्हें लिखवाने के} स्वयं लिख रहा हूँ।

22 परमेश्वर उन सब को शाप दे जो प्रभु से प्रेम नहीं करते। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु शीघ्र वापस आए।

23 {मैं प्रार्थना करता हूँ कि} प्रभु यीशु तुम पर अनुग्रह करे।

24 मैं तुम सब से प्रेम रखता हूँ, चूँकि परमेश्वर ने हमें यीशु
मसीह के साथ एकजुट कर दिया है। ऐसा ही हो!